Please note 1: while transliterating into Devanagari:

short form of "e" (sounds like .. g ***e*** t) "ऎ" is used to reproduce Telugu. ex: ग् + ऎ = गॆ ..

g ***e*** t (गॆट्)

short form of "o" (sounds like .. d ***o*** nate) "ऒ" is used to reproduce Telugu. ex: ड् + ऒ = डॊ . .

d***o*** nate (डॊनेट्)

Of course usual long form of "E" "ए" (like g ***a*** te .. गेट्) and long form of "O" "ओ" (like v ***o*** te .. वोट्)

are already part of the Devanagari script.

Please note 2: The transliterated Telugu lyrics in Devanagari script should be read as Sanskrit lyrics to get the correct diction and words.

> **i.e., Unless the halaMtaM or virAm is specifically used in the transliterated Telugu lyrics into Devanagari script, one should not apply the halaMtaM or virAm while pronouncing the words in the lyrics unlike in Hindi.**

ॐ श्री गुरु चरणारविंदाभ्यां नमः
ॐ श्री महा गणपतये नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
हरिः ॐ

1) भूपालं - आदि ताळं

मेलुको श्रीवेंकटेश मेलुको शेषाद्रिवास ॥मेलुको॥
मंगळ मूर्ति मेलुकोवय्य नीनगु मोमु जूप ॥मेलुको॥
करुणिंप वेग रावय्य अदिगदिगो नी दासानुदासुलु
अज रुद्रादुलु तत्त्व ज्ञानुलु वेचियुन्नारु ॥मेलुको॥
दधि नवनीत क्षीरमुलु आरगिंप रावय्य सन्नुतांग
नीविंदु मा हृदयानंदमु गादे क्षीरसागर विहार ॥मेलुको॥
राजीव लोचन रम्य गुण धाम ना मॊरालकिंप रावय्य
दीनावन अनाथुल अहर्निशलु आदुकॊन रावय्य ॥मेलुको॥
पुरंदर रामदासन्नमय्य त्यागराजादि हरिदासुल
दिव्य गानमुलु विन रावय्य सामगान विलोल ॥मेलुको॥

2) बेगड / रागमालिक - आदि ताळं

अतुलित हरिनाम संकीर्तनमु निरतमु हृद्गतमनि ॥अतुलित॥
कॊलिचॆद निन्ने निरवधि सुखदायक कमला मनोहर ॥अतुलित॥
भावमुलोन भाव्यमंदुन, ने जपिंचुनदि नी ॐकार प्रणवनादमे
ने ऊहागानमु सेयु सप्त स्वरार्णव प्रेरित रागालापनचे रंजिल्लु ॥अतुलित॥
ने चेयु नीरूप कल्पन षड्जम श्रुति ध्वनिये तानमु
अलरु अनंतमु, पलुपलु विधाल पाडेनु नीतारक
नाम कीर्तन पल्लवितो मेळविंचि, स्वर राग रंजितमौ
अनुपल्लवितो विन सॊंपुगा गानमु चेयु वाडनुरा ॥अतुलित॥
सरागाल राल्गरगिंचु विमल गांधर्वमुतो
ने गानमु चेयु चरण पंक्ति नी दिव्य चरणाभिवंदन
स्तोत्रमे, श्रीहरिदासुलु निरतमु विनुतिंचु ॥अतुलित॥
गति प्रस्तार युत लयविन्यासमे तिल्लान धृतप्लुत
पद न्यासात्त सौरभमु, अदे हरि पद सौरभमु
तधिंत तधिंत तकिटधिमि धिमि धिमि तधीं
तकिटधिमि तकिटधिमि तकिट हं तधीं
जयजय सकल भुवनाश्रयं सद्यतिभि
सेव्यं विष्णुं विश्व गुरुं, विराजिल्लु ॥अतुलित॥

3) आरभि /रागमालिक - आदि ताळं

कॊलुवग रारे कोदंड रामुनि नेत्राभिरामुनि रामुनि ॥कॊलुव॥
जगदभिरामुनि सीताभिरामुनि शुकालापाभिरामुनि ॥कॊलुव॥
चूड चक्कनय्यनु रामय्यनु चूड वेयि कनुलु
चालुना ना पावन रामुनि, सद्गुण गानमु विन
ई वीनुलु चालुना नारद गान लोलुनि नतजन पालुनि ॥कॊलुव॥
चेतुलारंग श्रीकरुनि पद पंकजमुल बंटु रीति

पूजिंप चालुना वेयि करमुलैननु,
सॊंपुगा श्रीरंग रंगनि चिद्विलासाल
वर्णिंप तरमा मेटि पंडिताराध्युलकैन, रारे ॥कॊलुव॥
दिव्य मंगळ धामुनि वनमाला धरुनि सेवमिंचिन
सर्व रोग निवारिणि परमौषध मेदिरा, आ परंधामुनि
ओ राम जय राम शृंगार राम अनु ई हरिदासुनि
श्रीराम चिंतनामृतमुचे जिह्व चापल्यमु तीरदा ॥कॊलुव॥

4) शहन / रागमालिक - आदि ताळं

ऎंतनि वेडेदिरा निनु नॆनॆंदु वॊदिकेदिरा ॥ऎंतनि॥
निनु कनुगॊन ई तनुवु ई कनुलु चालुना ॥ ऎंतनि॥
गोदावरी सलिल संस्थित भद्राद्रि नंदुंदुवेमो चूतमन्न दॊरकुना
समयमु ननुजूड, भ्रातृभिस्सहित सीता समेतुनिकि, तिरुगुनट मारुति
वॆन्नंटि निरतमु, स्थिरमुगा नॆलकॊन्न यादगिरि लक्ष्मी नृसिंहुनि
चेरुवकु पोदमन्न नीसाटि वैरि तनयुडना नी चूपु तगल ॥ऎंतनि।
शेषाद्रि शिखरान नॆलकॊन्न श्रीवेंकटेशु कडकु नेगि चूतमंटे
इद्दरु सतुलु इरुवैपुल नॆकसक्केमु लाडुचुंड नेनॊक लॆक्कया
भोगींद्र शयनुडु श्रीरंगशायि दरि चेरुदमन्न पट्टपुराणु लॆनिमिदि मंदि
इंदीवराक्षुलु पदुनारु वेलु नीचुट्टु मुट्टि युंदुरु ऎल्ल वेळल ॥ऎंतनि॥
गुरुपुर पति पाहिमां अनि नी पदमुलु पट्टुदुनन्न
नारायणीय कथनमु तॆलियुना अनॆदवु, अल वैकुंठ पुरमुलो
आमूल सौधमुलो रमा विनोदितुडवैन श्रीहरि निनु चूतमंटे
ई श्रीहरिदासुनिकि बॊंदितो वैकुंठ प्राप्ति युन्नदो लेदो, अरय ॥ऎंतनि॥

5) कानड - एक ताळं

कृपा निलयमैन जगद्गुरु मूर्ति नीकु वंदनमुलु ॥कृपा॥
अजुडंदुरु निनु भवुडंदुरु कॊंदरु
माधवुडंदुरु मरि कॊंदरु, मायंदु निरतमु
वॆलयु मा सद्गुरुवु नीवे अंदुनु महित गुण धाम ॥कृपा॥
परिकिंप अन्नि रूपुल अणुवणुवुन गुरुवै वॆलुगु
मा कुलपतिवि श्रीहरिवि नीवे, श्रीसत्य नारायणुडवु
ई गुरुपूर्णिम नाटि ज्योतिर्मयुडवु ॥कृपा॥
तॆलिसिन सुज्ञानिकि अन्नियू तॆलियुनट
नी गरिम नी महिम, तॆलियनि अज्ञानिकेमि तॆलियुनु
ई हरिदासुडु सेयु गुरु पूजल नोमु पंट ॥कृपा॥

6) सौराष्ट्र - रूपक ताळं

आदित्य अमरेश अज त्रैलोक्य चूडामणि नमो नमः ॥आदि।
कालात्म सर्वात्म वेदात्म विश्वतोमुखुडवु नीवेरा
जन्म मृत्यु जराव्याधि संसार भयनाशक दिवाकर नमो नमः ॥आदि॥
उदयान ब्रह्म स्वरूपान मध्याह्नान महेश्वरुडवुग
अस्तमय कालान विष्णुरूपान तनरु त्रयीमूर्ति नमो नमः ॥आदि॥
कुक्षि रोग निवारणमु चेयु सूर्यमूर्ति जपाकुसुम संकाश
श्रीमहाविष्णु तत्त्व प्रकाश श्रीहरिदास मनोभीष्ट वरद नमो नमः ॥आदि॥

7) गौळ - चापु ताळं

दधिशंख तुषाराभ क्षीरोद्भव संभव शशिवर पाहिमाम् ॥दधि॥
इंपुगा वासुदेवुनि नयनमुग शिवुनि शिरो भूषणमुग
चेलुवोंदु श्वेत वस्त्रधर चतुर्भुज केयूर मकुटोज्ज्वल ॥दधि॥
क्षयापस्मार कुष्ठ्यादि ताप ज्वर निवारण चेयु
सर्व संपत्कर चंद्रग्रहम! श्रीमहा विष्णु तत्त्वमनि
श्रीहरिदासुलु सदा सेविंचु श्वेत माल्यांबर धर ॥दधि॥

8) धन्यासि - चापु ताळं

कुमार शक्तिहस्त मंगळप्रद प्रणुतिंचेनुरा ॥कुमार॥
महा तेजस्संपन्न भक्तवत्सल भूदेवि सुत
श्रीमहाविष्णु तत्त्वमुगा तनरु मंगळ रूप ॥कुमार॥
ऋणबाध विमुक्ति चेयु कुज ग्रहमु
नीवनि श्रीहरिदासुलु निरतमु प्रकीर्तिंचु
अंगारक नामधारि सुरासुर संपूजित ॥कुमार॥

9) वसंत - आदि ताळं

पीतप्रभ चंद्रसुत सुराद्य बुध महा देव नमो नमः ॥पीत॥
नी आश्रयमे शरण्यमटने पीतांबर धर किरीटि चतुर्भुज आपस्मार
कुष्ठ्यादि व्याधि बाधल अविद्यादि सर्व ग्रह पीडल निवृत्ति चेयु देव ॥पीत॥
श्रीहरिदासुलकु सर्वाभीष्ट फलप्राप्ति नोसंगि श्रीहरि पद भजन
तत्परुल जेयु श्रीमहाविष्णु तत्त्वस्वरूप नमो नमः ॥पीत॥

10) रंजनि - चापु ताळं

सर्व कार्य सिद्ध्यर्थं प्रणमामि गुरुं सदा, अनरे ॥सर्व॥
त्रिलोकाल सत्कीर्ति गोन्न त्रिकालज्ञ सुज्ञान सुरगुरो
ऋग्वेत्ताचित्तगश्च प्रजापति श्रीमहाविष्णु रूप नमो नमः ॥सर्व॥
ब्रह्म पुत्रुंडवु ब्राह्मणेशुंडवु ब्रह्म विद्यलंदु
निष्णातुंडवैन बृहस्पति जगद्विख्याति गल सर्व लक्षण
संजात, सुरेंद्र वंद्युडवु नीवेरा श्रीहरिदासार्चित ॥सर्व॥

11) देवामृतवर्षिणि - आदि ताळं

आधिव्याधि हर भूरि विक्रम पुण्य दायक पाहिमाम् ॥आधि॥
वर्ष प्रद हृषीकेश क्लेश नाशक शुक्लग्रहम श्लाघिंतुरु
निन्ने हे चिंतितार्थ प्रदायक भवपाश हर ॥आधि॥
दिव्य तेजो निभ श्रीहरिदास वंद्य ज्ञानानंद योगीश्वर
श्रीमहा विष्णुरूप योगविदांवर पुरुहूतादि सुरनुत ॥आधि॥

12) वागधीश्वरि - आदि ताळं

निश्चलाय छायापुत्राय शर्वाय शनैश्वराय नमः ॥निश्च॥
सर्व विद्या स्वरूपुडवगुटचे अविद्या नाशकुडवंदुरे
आयुष्य कारक कष्टौघ नाशक अशेष धन वरद भानुपुत्र ॥निश्च॥
श्रीहरिदासुलकु विशेषफल प्रदायकुडवे हे निरामय
निर्गुणात्मक श्रीमहाविष्णु तत्त्वरूप परमपावन पाहिमाम् ॥निश्च॥

13) बहुदारि - रूपक ताळं

प्रणमामि सदाराहुं सर्पाकारं किरीटिनम् ॥प्रण॥

विषान्न जनित भीति मनो रोगादि निवारक
सर्व संपत्कर अष्टम ग्रहमुगा अलरु हरे ॥प्रण॥
चतुर्भुज चर्म शूल खड्ग वरांग गोमेधिक विभूषण
श्रीहरिदास शुभ प्रदायक श्रीमहा विष्णुरूप ॥प्रण ॥

14) अठाण - त्रिपुट ताळं

रौद्रं रौद्रात्मकं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥रौद्रं॥
वैडूर्याभरणादुल चॆलगु किरीटमुतो शोभिल्लु कराळ वदन
सर्वोपद्रवमुल निवारिंचु नवमग्रहम विष्णुस्वरूप पाहिमाम् ॥रौद्रं॥
धूम्रवर्ण ध्वजाकार द्विभुज चित्रांबर धर चित्रवर्ण
श्रीहरिदासुल सर्व दुःखविनाशक स्वरूप पाहिमाम् ॥रौद्रं॥

15) हिंदोळ - आदि ताळं

मरि यितरमु गलदे विश्वमु विष्णुवु नीवेरा ॥मरि॥
विनुत गुणशील विनरादा ई हरिदासुनि विन्नपालु ॥मरि॥
अज हरादुलकैन तरमा नीवु गीचिन गीतदाट
नीवाडिंचिन गद ने नाडेदि नगधर शौरि, नी कन्न ॥मरि॥
ना भावनलोने सदा नॆलकॊन्न वर कोदंड पाणि
नीवाडने वॆलिति सेयकुरा, नीनाम रूपालु विना ॥मरि॥
एराजपोषणमुन्ननेमि इललो, सत्सार्वभौम
नी सन्निधि कावलॆनायॆ, राम नाम चिंतन गाक ॥मरि॥

16) बृंदावनसारंग - रूपक ताळं

गोवर्धन गिरिधर गोपिका लोल निन्ने कॊलिचॆद ॥गोवर्धन॥
तपो योगमुचे उपासिंतुरु कॊंदरु
चतुर्भुजुनिग नील वर्णुनिग श्रीनिवासुनिग ॥गोवर्धन॥
सृक्सृवादुलु, पूनिन यज्ञ मूर्तिग यजिंतुरु
ई जगान परम योगुलु वेदोक्त कर्म योगमुचे ॥गोवर्धन॥
मनमारग अर्चिंतुरु आगमोक्त विधान निनु मरि कॊंदरु
शंख चक्र गदाधर वेणुनाद विनोद तुलसीदाम भूषण यनि ॥गोवर्धन॥
नुतिंतुरु सदा नादोपासकुलु पुरंदर रामदासन्नमय्य
त्यागराजादि हरिदासुलु राम कृष्ण गोविंद नाम संकीर्तनलतो ॥गोवर्धन॥

17) द्विजावंति - चापु ताळं

पंचात्मक स्वरूपुडवनि विनुतिंचेरु विश्वान ॥पंचा॥
ब्रह्म विष्णु शिवेश्वर सदाशिव मूर्ति नाम भेदमुलचे ॥पंचा॥
शुद्धतत्त्व मयुडवु विष्णुवनि नुडिविरि गादे सद्गुरुलु
सत्त्वगुण लेशमै रजोगुण शोभितुडवैन कमलोद्भवुडवु ॥पंचा॥
नित्यमुक्तमु निर्विकारमु निरीहमु निर्द्वंद्वमु नी रूपमु
सत्त्वगुण वंतुडवैयु तमोगुण विकारमुचे वॆलुगु शिवुडवे ॥पंचा॥
ॐकार प्रणवनाद स्वरूप अद्वितीय पर ब्रह्मवु नीवे यनि
मनसु नी सर्वांगाल नुंचि संस्तुतिंचेरु श्रीहरिदासुलु ॥पंचा॥

18) हरिकांभोजि - आदि ताळं

साकारमुतो नैन निराकारमुतो नैन आराधिंचेरु ॥साकार॥
रामाभिराम श्रीराम जगदभिराम सर्व मंगळाकार ॥साकार॥

सर्व शरीरांतर्गत क्षेत्रज्ञुडवु नीवे गदरा
जगद्विलक्षणमु नी तत्त्वमु नी दिव्य स्वरूपमु
परम गम्यमैन अक्षर परब्रह्म अचिंत्य रूप ॥साकार॥
सर्वत्र निज स्वरूप विराज मानमु नी विभूति योगमु
व्यक्ताव्यक्त जगद्कारण हेतुवु नीवटने विश्वेश्वर
श्रीहरिदास सन्निहितुडवु नीवेरा परंधाम ॥साकार॥

19) मुखारि - खंड चापु ताळं

ननु मरुव तगुनटया ना मेटि दैवम ॥ननु॥
ना परम पावन राम पट्टाभिराम ॥ननु॥
चेतुलारंग श्रीहरिनि पूजिंपनि ई चेतुलेल
दाशरथि चरितमु विननि ई चॆवुलेल ॥ननु॥
श्रीकांतुनि कमनीय शोभनु कननि ई कनुलेल
अवतारपुरुषुनि तॆलियनि ई ज्ञानमेल ॥ननु॥
मदन गोपालुनि स्मरिंपनि ई मनसेल
पतित पावन रामुनि वर्णिंपनि ई पलुकुलेल ॥ननु॥

20) साम - रूपक ताळं

निरुपम नीरज नयन पट्टिति नी पद नीरजमुल ॥निरुपम॥
नीवे युंटिवि अन्नि भूतमुलंदु आत्म रूपान, ऎंदु जूचिन
नी जगन्मोहन द्युति गाक वेरॊंडु कलदा अतसी कुसुमाभ शरीर ॥निरुपम॥
लेदु संशयमु ई हरिदासुनि मनमुन, सर्वमु विष्णु
मयमु, ईश परमेश ई विश्वमंत नी विभूति योगमनि ॥निरुपम॥

21) वीर वसंतं - आदि ताळं

श्रीहरि! प्रियमारग नीनाम स्तुति चालदा ॥श्रीहरि॥
सदा वंदनीयमु नीपद पंकजमुलु, संसार ताप विध्वंसिनि
नीसेवा निरति, तल्लि तंड्रि गुरुवु दैवमु नेस्तमु नीवे नीरज निलय ॥श्रीहरि॥
विनुतिंप चालरु कदा ब्रह्मादुलैन नी चिद्विलासाल
महित गुण संपदल श्रीहरिदासार्चित श्रीकर शिवंकर ॥श्रीहरि॥

22) पंतुवराळि - आदि ताळं

ऎंतटि भाग्यमो नाराम जननमु ॥ऎंतटि॥
आनंद धाममो ना इनकुल दैवमु ॥ऎंतटि॥
चिरुत प्रायमुवानि चिरंजीवुनी
दरहास नयनुनि गन्न दशरथुनिदी ॥ऎंतटि॥
कैवल्य धामुनी कमनीय शोभुनी
वॆनुवॆंट गॊनिपो विश्वामित्रुनिदी ॥ऎंतटि॥
सौमित्रि भरत शत्रुघ्नु समेतुनी
अयोध्या पुरीशुनि जेपट्टिन जानकिदी ॥ऎंतटि॥

23) आरभि - आदि ताळं

चूतामु रारे निखिलेश्वरुनी ॥चूतामु॥
वेदाद्रि वासुनी वेंकटेशुनी ॥चूतामु॥
शृंगार धामुनी श्रीनिवासुनी
अलमेलु पतिनी आत्मा रामुनी ॥चूतामु॥

नीलमेघ निभुनी नीरज नयनुनी
वागधीशुनी वरद हस्तुनी
पावन चरितुनी पन्नग शयनुनी
भाग्याधीशुनी भवभय हरुनी ॥चूतामु॥
परम पुरुषुनी परंधामुनी
कौसल्यात्मजुनी कारुण्यशीलुनी
कॊलुवै युन्न ई कॊंडल दॊर नीड
पोदामु रारे वेंकटगिरिकी ॥चूतामु॥

24) हुसेनि - जंपॆ ताळं

दासुडनु नेनु श्रीहरिदासुडनु नन्नेलुको ॥दासुडनु॥
पिलचुट नावंतु पलुकुट नीवंतु गादे
पलुमारु पिलिचिननु पलुक वदेमिरा ॥दासुडनु॥
वरमडुगुट नावंतु वरमीयुट नीवंतु
वरमीयनि वेलुपु नॆंदाक गॊलिचेदिरा श्रीकर ॥दासुडनु॥
पंतमेलरा कापाड रारा नाद हरे जगन्नाथ हरे
नाजीवाधार चक्रि नीपॊंत लेनि ई जन्ममेलरा ॥दासुडनु॥

25) बिलहरि - रूपक ताळं

तव चरणं शरणं भव हरणं सदातवपद दासोहम् ॥तव॥
तव दासोहं पाहि मुकुंद पाहि ॥तव॥
गोविंद नाम संकीर्तनं अप्रमेय वरदम्
मम हृदये सदा तव दिव्य विभूति योगम् ॥तव॥
आदि मध्यांत रहितं विश्वमोहन रूपम्
सदा कांक्षितं तव सन्निधि सेवा सौभाग्यम् ॥तव॥
पीतांबर परिधान नारद गान लोल पाहिमाम्
श्रीहरिदासार्चित श्री सच्चिदानंद स्वरूप ॥तव॥

26) तोडि - जंपॆ ताळं

ननु पालिंप सरगुन रारा राम रघुराम ॥ननु॥
तामसमु चेयु समयमिदि कादुरा स्वामि ॥ननु॥
नीरूपु जूड नोचुकोनि नाजाड तॆलिसि
मुद्दु मुद्दुगानु मुच्चटैन सॊंपुतो ॥ननु॥
ना इंगितमु विन रारा वर कोदंड पाणि
नीपदमुले गति यनि कनुगॊंटिनि इक ॥ननु॥
श्रीहरिदासुडनैन नेनेमनि पॊगडुदु, नॆनॆंतनि
वर्णिंतु निनु ओ जगदभिराम करुणिंचरा ॥ननु॥

27) आनंदभैरवि - मिश्र चापु ताळं

रंग रंग श्रीरंग रंग कावेटि रंग ॥रंग॥
सन्नुतांग सारंग रारा मा इंटि दाका ॥रंग॥
वंदि मागध स्तोत्रालु कावलॆना निराडंबर
हरि नामोच्चारणमु ऒकटि चालदा ॥रंग॥
मरकत माणिक्यालु कावलॆना श्रीनिवास
पत्र पुष्प फलोदकालु चालवा स्वामि ॥रंग।

इह पर लोक तारतम्यमुलु ऎंच वलॆना निर्विकार
स्वर राग रंजितमौ पूलंगि सेव चेकॊन रारा॥रंग॥

28) मोहन - रूपक ताळं

मुकुंद माधव मुरळी गान लोल ॥मुकुंद॥
ननु पालिंपरा नादु दैवम ॥मुकुंद॥
अहल्या शाप विमोचन मॊनर्चिन
अगणित गुणधाम अजित पराक्रम
साम गान लोल समयमिदेरा ॥मुकुंद॥
करुणिंप रावय्या करुणालवाल
मंगळालय महनीय मूर्ते
आदरिंपु मिदे आनंद धाम ॥मुकुंद॥

29) देवगांधारि - चापु ताळं

कॊलुवगरारे श्रीहरिनि सललित मधुर भाषणुनि ॥कॊलुव॥
लोकाभिरामुनि श्रीरामुनि सर्वजगदाधारुनि ॥कॊलुव॥
कलि कल्मष संकलित मनो चापल्यमुचे चॆडवलदु,
सत्य ज्ञानानंद सर्वात्म सांगत्यमुकै जनुलारा ॥कॊलुव॥
ऎंत नेर्चिन नेमि ऎंदाक चदिविन नेमि, फलमु शून्यमे
चदुवुल मर्ममगु परब्रह्म तत्त्व मॆरुगुटकै ॥कॊलुव।
सस्य श्यामल शोभितावनि वीडि मृग तृष्ण नाशिंप वलदु,
संकटाल बापु श्रीहरिदास सन्निहितुनि दिव्य चरणालु ॥कॊलुव॥

30) अठाण - आदि ताळं

म्रॊक्कतगिन वाडवु नीवेरा मोक्षदायकुडवु नीवेरा ॥म्रॊक्क॥
रघुकुलांबुधिसोम महित गुणधाम मनवालकिंचरा ॥म्रॊक्क॥
"रा" अनु अक्षरमुचे पापमुलु तॊलगुनट गदरा राम
"मा" अनि नंतने भवबंधचयमु हरियिंचुनटने ॥म्रॊक्क॥
राम नामामृतमु मधुराति मधुरमु गदरा राम
रामहरे अनि तलचिन जन्म रहित मगुनट भळि भळी ॥म्रॊक्क॥
राम नाम तारकमंत्र महिमनु कनुगॊंटिनिरा राम
बंटुरीति गॊलिचे श्रीहरि चरण दासुनि करुणिंच रारा ॥म्रॊक्क॥

31) केदारगौळ - रूपक ताळं

अंतट नीवै वॆलुगॊंदु ना स्वामि ॥अंतटा॥
एतावुन निलिचेदिरा निनु जेरनू ॥अंतटा॥
पॊंगुगा पांचालिनि चेर दीसिन निनू
एमनि पॊगडुदुरा मान रक्षक मां पाहि ॥अंतटा॥
निरूपु जूड अदि येमि वैष्णव माययो
आत्मवु नीवे परमात्मवु नीवे ऎंदनि वॆदिकेदिरा ॥अंतटा॥
सदा सन्नुति जेसेनुरा विराट्स्वरूप
सर्वांतर्यामिवै बलि दर्प मणचितिवि गादे ॥अंतटा॥

32) शुभपंतुवराळि - चापु ताळं

पलुक वदेमिरा नटनल नल्लनय्य ॥पलुक॥
नीवु पलिकिन भवताप हरमगुनट ॥पलुक॥

चॆलुवुग उप्पॊंगु श्रीवल्लभ श्रीविभावन
ना कलिमिलेमि तनमेमि तॆलियुनय्य ॥पलुक॥
पलुकु तेनिय लॊलुकु नीमुद्दु मोमु जूप
कलिकि कनुसैग कावलॆ नेमिरा लावण्य राम ॥पलुक।
तॊलि ना जन्म फलमेमो करुणिंप रारा राम
चालुनय्य नीनटनलु ई हरिदासुनिपै ॥पलुक॥

33) कर्णरंजनि - आदि ताळं

मंजुल मृदंग ताळमुलचॆ रंजिल्लु नट कर्णाटकमै ॥मंजुल॥
सप्त स्वर राग सुनादमुचे शोभिल्लु नट श्रीहरि नाममु ॥मंजुल॥
बीजाक्षर द्युति संकाशमु मंगळ प्रदमु विन सॊंपैन
श्रीहरि नाम स्मरणमु भवभय हरमट भजिंप रारे ॥मंजुल॥
श्रीहरिदासुलकु नत्यंत प्रीतिकरमगु वंशीकृष्ण गानामृतमु
जगदानंदकरमु अक्षय वरप्रदमु आनंदामृत धाममु
श्रीहरि ध्यानमु सर्व संपत्करमनि अरयरो भजनपरुलारा ॥मंजुल॥

34) कल्याणि - एक ताळं

भजरे मानस भज नारायणं भज नारायणम् ॥भजरे॥
श्रीमन्नारायणं सत्य नारायणं हरि नारायणम् ॥भजरे॥
अनेक सहस्र नामाख्यं अनंत नामधरं
उनिकिकि "कृषि" धातुवु सच्चिदानंद स्वरूप बोधम् ॥भजरे॥
"ण" कारं जन्म तारकं सर्वपाप हरणम्
कृष्ण नामाख्यं अप्रमेयं राम नारायणम् ॥भजरे॥

35) बौळि - आदि ताळं

नारायण नारायण अनरारे ॥नारा॥
हरि नारायण हरि नारायण हरि हरि अनरारे ॥नारा॥
पतित पावनुनी पंकज नाभुनी
मधुसूदनुनी मंजुल मूर्तिनी ॥नारा॥
जगन्नायकुनी जन रंजनुनी
भद्राद्रि वासुनी भव्यातीतुनी ॥नारा॥
गीत गोविंदुनी घन नीरद श्यामुनी
नवनीत चोरुनी नटनल नमरुनी ॥नारा॥

36) शुद्धधन्यासि - आदि ताळं

वंदे श्रीसत्य नारायणं वंदे पर्तिपुरीशम् ॥वंदे॥
पाहिमां जगदोद्धारक पाहिमां लीला मानुष वेष ॥वंदे॥
दीनबंधो पाहि महेश पाहि पाहि नारायण
वेणुगान विनोद पाहिमां पाहि कारुण्य सिंधो ॥वंदे॥
भवतारक नामं सत्य नारायणं सच्चिदानंदम्
मानस भजरे भज नारायणं भज नारायणं हरे ॥वंदे॥
मम हृदये तव नामं श्रीसत्य नारायणम्
श्रीलक्ष्मी नारायणं सदा तव पद भजनं शुभप्रदम् ॥वंदे॥

37) शहन - खंड चापु ताळं

गीतार्थ ज्ञानमु तॆलियग रारे जनुलारा ॥गीतार्थ॥

नातारक रामुनि सेविंप रारे चॆलुलारा ॥गीतार्थ॥
गंगि गोवु पालु सुंतैन चालदा
नामदन गोपालुनि पॊंत इंतैन चालदा ॥गीतार्थ॥
नी तत्त्व मॆरुग तरमगुनटे इल
अज रुद्रादुलकैन, नीमाय जूड ॥गीतार्थ॥
सॊंपुगा सिरि जेपट्टिन नी सरि ऐवरुरा
जय कोदंड राम परम पावन राम ॥गीतार्थ॥

38) मंगळ कैशिक - आदि ताळं

नील गगन घन श्यामांग श्रीकृष्ण परब्रह्म वंदनमुलु नीकु ॥नील॥
शुद्ध ज्ञानानंद देव नित्यानंद संदोह योगि हृद्यान गम्य
नीपद भजने सत्संगीत सारमु मंजुल श्रुति रंजकमुरा श्रीश ॥नील॥
मॆरयु इंद्र नील दर्पणमु नी शरीराभमु, अव्यक्तमु नीविष्णु तत्त्वमु
मयातीत स्वरूप सनकादि मुनिबृंद सेवित कैवल्य धाम ॥नील॥
रंजिल्लु श्रीवत्स रम्य, तरळित श्रीहारमुतो शोभिल्लु जगन्मोहन
चॆलुवगु कौस्तुभ रत्न रागमुचे राजिल्लु श्रीकर श्रीहरिदास विनुत ॥नील॥

39) यदुकुल कांभोजि - रूपक ताळं

हरे हरे श्रीहरे यनि पॊगड रादटे ओ मनसा ॥हरे॥
चिन्नारि पॊन्नारि चिन्नि कन्नय्य अनुचु
मुद्दु सेयु यशोद पूजा फलमु ए नाटिदो ॥हरे॥
ओ नायन मा नायन मा मुद्दुरंग अंटु
मुरियु वकुळ नोचिन नोमु पंट ए नाटिदो ॥हरे॥
एमय्य कृष्णय्य चॆलिकाड रावय्य यनि
पलुमारु पलुवरिंचु नरुनि पूज फलमु एनाटिदो ॥हरे॥
ओ राम जयराम ॐकार राम अनुचु नुतिंचु
विनुत त्यागराजादि हरिदासुल सेव लेपाटिवो ॥हरे॥

40) आंदोळिक - आदि ताळं

इंअत कन्ना कावलसिन देमिरा जगदानंद कारक ॥इंत॥
इंतनि चॆप्प जालुदुना नीनाम स्मरण महिम,
तॊलुगु नटने जन्म संसार बंधमुलु,
चालदा श्रीहरि नीरूप गुण संकीर्तनमु ॥इंत॥
कलडंदुरु ऎंदु वॆदिकिननु, ऎंदु जूचिन अंदे कनबडु वाडवु
मनसु निलिपि ए तावुन तलचिन आ तावुनने प्रभविंचु विष्णुवंदुरु ॥इंत॥
नीनाम स्मरण श्रवण संकीर्तन महिमनु तॆलिसि
ई श्रीहरिदासुडु नी अडुगुलकु मडुगु लॊत्तुनु ॥इंत॥

41) रीतिगौळ - आदि ताळं

गानमु चेयरे ममत बंधन युत पाप विदूरुनि ॥गान॥
अर्चन ध्यान स्तुति नमस्कृति यज्ञमुलचे सेविंपरे
अनंत पद्मनाभुनि परंधामुनि भवताप नाशनमुकै ॥गान॥
परात्परुडतडे ई चराचर प्रपंचमुनकु, परेशुडु
परम पुरुषोत्तमुडु श्रीहरिदास तोषणुडु, विश्वमेले
परमात्मुनि दिव्य विभूतिनि सततोत्थितुलै सदा सद्भक्तितो ॥गान॥

42) श्रीरंजनि - आदि ताळं

जय गोविंद हरे जय गोविंद हरे यनि पॊगडंग रारे ॥जय॥
आद्यंतमुलु लेनि सर्वेश्वरुंडे हरि यनुवाडु
विश्वाधिपति सकल शोकतापमुल हरिंचुवाडु अतनिनि ॥जय॥
ऐव्वनिचे जनिंचु ई विश्व मॆव्वनि लोपल पॊंदुग
ऒदिगि युंडुनो आतडे श्रीहरि अनि तॆलिसि कुदुरुग ॥जय॥

43) बलहंस - त्रिपुट ताळं

परम भागवतुलु पलिकिन परतत्त्वमे ब्रह्म तत्त्वमु ॥परम॥
सर्व धर्म सारमदे, ॐकारनाद स्वरूपं अच्युतम् ॥परम॥
वेदमयुडैन विष्णुवे लोकोत्तर लावण्युडु, सकल लोकालकु
लोकाधिपतुलकु सकल लोक निवासुलकु, आलोकान्नि प्रसादिंचु,
श्रीहरिदासुल आपद्बांधवुडु आ जगन्नाथुनि आराधिंचरे ॥परम॥

44) धन्यासि - त्रिपुट ताळं

यदुवंश कुलतिलक नीकन्न दिक्केवरुरा दिव्यधाम ॥यदु॥
पांच भौतिक स्थावरमैन ईजीवुनि मनो क्लेशमु बापु
परब्रह्म तत्त्व प्रकाश, सुज्ञानज्योतिर्मयुडवे ॥यदु॥
विश्वमोहनाकार परम योगि हृद्यान स्थावरमु नीवे
प्रणवनाद स्वरूपुडवु नीवे सर्वमयमु नीवेरा सदानंद ॥यदु॥
घोर पाप विदूर रारा रम्य गुणधाम प्रशांतिधाम
ई श्रीहरिदासुनि करुणिंप रारा चलमेलरा वेग रारा ॥यदु॥

45) नारायणगौळ - जंपॆ ताळं

हरिनि कॊलुवुडी श्रीहरिनि कॊलुवुडी ॥हरि॥
राग ताळ गतुल श्रीहरिनि स्तुतिंचुडी ॥हरि।
करि वरदुनि ऒकपरि तिलकिंचि नंतने
बरुवैन नरजन्ममु तरिंचु नटने ॥हरि॥
मुरळीधरुनि ऒकमारु सेविंचिनने
नरुनिकि इल मोक्षमु दॊरकु नटने ॥हरि॥
मुरहरिनि परिपरि विधमुल पॊगडिन
श्रीहरिदासुनि तापत्रयमु अणगु नटने ॥हरि॥

46) आभेरि - आदि ताळं

गोचरिंचु गोविंदुड वंदुरे गॊल्लॆतलु ॥गोच॥
ए रूपमुलो भाविंचिन आ रूपमुलोने ॥गोच॥
पावनमगुनट निक्कमी जीवुनि बाह्याभ्यंतरालु
कमलेश केशव निनु भक्ति प्रपत्तुलतो पूजिंचिनने ॥गोच॥
स्मरिंचिनने अलौकिकमैन तेजस्सु असाधारण
ध्याननिरति लभिंचुट तथ्यमु, श्रीहरिदासेश
सर्व धर्ममुलकु निधानमु गदर धर्मेंद्र ॥गोच॥

47) आहिरिभैरवि - चापु ताळं

नीवे समस्त तेजस्सुलकु तेजस्सु तपस्सुलकु तपस्सु ॥नीवे॥
पवित्रतकु प्रमाणमु नीवेग, मंगळालय महनीय ॥नीवे॥
पुनर्जन्म रहितमैन कैवल्य धाम अच्युतुडवनि अर्चिंपबडु

श्रीमहा विष्णुवनि श्रीहरिदासुलु सदा कांक्षिंचु परम गतिवि ॥नीवे॥

48) शंकराभरणं - रूपक ताळं

नीवेरा परम दैवमु पवित्रुडवु पतितपावनुडवु ॥नीवे॥
कल्याणधाम सकल शुभप्रदात परंधात
आदिपुरुष अनादिनिधन अक्षर परब्रह्म ॥नीवे॥
उद्भविंचिनदट तॊलुत ई विश्वमु नीवलनने, ओ परमेश
लीनमगुनु तुदकु नीयंदे ई महाजगत्तंत, जगद्पतिवै
शोभिल्लु श्रीहरिदास तोषक सर्व जगद्पोषक जगद्बोधकुडवे ॥नीवे॥

49) नाट - चापु ताळं

ए रूपान ऊहा गानमु चेसिन ए नामान कीर्तिंचिन ॥ए रूपान॥
अगुपिंचेदि ऒके तत्त्वमु अदिये विश्वतत्त्वमु विष्णुतत्त्वमु ॥ए रूपान॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंधादुललो प्रवेशिंचिन
परब्रह्म तत्त्वमु विश्व व्याप्तमु,
इंदु कलडंदु लेडनु संदेहमेल
अंदे विश्वमु अंदे सर्वस्वमु ऎंच ॥ए रूपान॥
लिंग भेदमु लेदी विश्वात्मकु, चराचर
जगत्तुलो संचरिंचु हरिये अन्निटिनी
स्पंदिंचु परात्परुडु विश्व रूपुडे
श्रीमहा विष्णुवु, श्री हरिदासुल ध्येयमु ॥ए रूपान॥

50) दर्बार् - एक ताळं

जयतु जयतु नारायण गोविंद ॥जयतु॥
जयतु जयतु मुचिकुंद वरद ॥जयतु॥
नी यडुगुलकु मडुगु लॊत्तुटयेग, ने चेयु विनुति
नादु दैवम, कैवल्य धामुडवनि नी शरणु जॊच्चितिरा ॥जयतु॥
म्रॊक्केद नी पादारविंदमुलके अवनत शीर्ष वदनुडनै
प्रसादिंचरा सद्गति श्रीहरिदास पूजित सुचरित ॥जयतु॥

51) गौळिपंतु - रूपक ताळं

करुणानिधि कृष्ण कारुण्य सिंधो शरणु शरणंटिने ॥करुणा॥
ने कोरितिना ऐहिक सौख्याल, बापुमंटिना शीतोष्ण
सुखदुःख द्वंद्वाल, भव बंध रहितुनि चेयमंटिना ॥करुणा॥
उद्यान वाह्याळुलंदु रम्य कुटीरालंदु क्रीडिंच
कोरितिना, ना जीवितेच्छ निनु कनुटंटिने, सदा नी नाम
संकीर्तनमे परम सौभाग्यमंटिने ओ हरिदास शरण्य ॥करुणा॥

52) मणिरंगु - चापु ताळं

अनुभविंपक तप्पदु गद पुराकृत जन्म फलमुल ॥अनुभ॥
श्रीहरे नीपद चरणाले शरणमंटिने श्रीहरिदासावन ॥अनुभ॥
हे मुरळी गान विनोद नाद शरीर परात्पर
सदय हृदय दयानिधे नन्नेलुकोरा ॥अनुभ॥
इंचुकैन आसक्ति लेदु चतुर्विध पुरुषार्थालंदु
अंतकन्न लेदाश कामादि भोगालंदु, नी चित्तमु
करिगिते निर्मल भक्ति कलुगु नटने नी दासुनिकि ॥अनुभ॥

53) खरहरप्रिय - आदि ताळं

नारदादि मुनिबृंद वंद्य नंद नंदन नयनारविंद ॥नारदा॥
सदा तव नाम स्मरणं धन्योपायं हे बृंदावनानंदि ॥नारदा॥
अंटिन चालुने शारद नीरद सदृशमैन नी पादारविंदालु
हरिंचु नटने जन्म जन्मांतराल कूडपॆट्टिन पापालु ॥नारदा॥
हरादि सुरवंदित सुजन पालक नी दासुड श्रीहरिदासुड
चालु नटने ननु कडतेर्चु नी करुणा कटाक्षमु लीजन्मकु ॥नारदा॥

54) कन्नडगौळ - आदि ताळं

ई भग्न जीवुनि श्रीहरिदासुनि चेरदीयु दीनशरण्य ॥ई भग्न।
उंडुनदि संसारमुन, ऊसर क्षेत्रमदि अपरिमित
दुःख दायकमु, नी नॆरवो निरंतर ज्ञानमनॊडि
संपूर्ण सागरमु सर्व संपत्कर मंदुरु गादॆ ॥ई भग्न॥
क्षुत्पिपासा बाधितुडनैन, नीपद दासुनिकि अमृत स्वरूपमु
सुमनोहरमु सुज्ञान प्रसादमैन श्रीहरे नी नाम जपमे
ने चेयुदु निरतमु नी अनुग्रह प्राप्तिकै, ओ चिद्रूप वरद ॥ई भग्न॥

55) ललित - चापु ताळं

नी पादारविंदाल पट्टितिरा राम मनोभिराम पावन राम ॥नी पादा॥
ममत बंधन युत दुस्तर संसारार्णवमु दाट गति नीवे गद
कलि कल्मष विदूर ई तनुवु पुलकरिंप अवनत वदनुडनै ॥नी पादा॥
अंजलि घटिंचिन नी दासुड श्रीहरिदासुड, मदि निरतमु
तलचु वाडने, नीतत्त्व मरय यिंद्रिय मनमुल निग्रहिंचरा ॥नी पादा॥

56) देशि - आदि ताळं

ना मनसु लग्नमैन चालदा नी चरण द्वयमंदु ॥ना मनसु॥
सकल वेद पुराणेतिहासालकु नॊरवै युन्न श्रीनिधि
निधिरव्यय निरुपम, नीरजनाभ श्रीहरिदासार्चित ॥ना मनसु॥
नी अंडदंड लुंडवलॆ, तॊलिसिन नेमि वेद वेदांगालु,
प्रवेशमुन्न नेमि प्रमुख संगीत सारस्वतालंदु ॥नामनसु।

57) बिलहरि - त्रिपुट ताळं

जन्म तरिंचुना श्रीहरि नी सन्निधि सेवाभाग्यमु दॊरकनिदे ॥जन्म॥
उन्न नेमि सुंदर शरीरमु, कलिगिन नेमि रूपसि यगु भार्य,
पेरु गॊप्पलु कासुलुन्न नेमि, सद्गुरुवैन नी शिष्यत्वमु विना ॥जन्म॥
तॆलिय नोचुकॊन वलॆनय्य नी प्राभव विभव संपदल
ओ कावेटि रंग श्रीरंग सारंग श्रीहरि दासांतरंग ॥जन्म॥

58) मायामाळवगौळ - आदि ताळं

चित्तमंदु नीवु निलिचिन ना जन्म तरिंचुनु गदरा ॥चित्त॥
ऎंतटिवैन नेमि देश देशाल गडिंचिन सन्मानालु कीर्ति प्रतिष्ठलु
प्रमुख पदवु लॆंतटिवैन नेमि सदाचार संपन्नुडनैन नेमि ॥चित्त॥
हे प्रभो जरुगुना ई हरिदासुनिकि नित्य जीवनोपाधि, स्थित प्रज्ञुडनै
नीपूज चेयनिदे, सर्व मंगळ दायक सद्गुण सांद्र रामचंद्र ॥चित्त॥

59) हिंदोळ - चापु ताळं

भवहर परात्पर श्रीकर नमो नम ॥भव॥

नी चरणमुले मोक्ष दायक मंदुरे हे अविनाश
स्वयंप्रकाश, भेद भाव रहित परंधाम ॥भव॥
भोग योगालंदु इच्च लेनप्पटिकी,
कलुगुनु सद्गति नी पदमुलु पट्टिनंतने,
निजमिदि यनि नुडिविरि गदरा श्रीहरिदासुलु ॥भव॥

60) शिवरंजनि - रूपक ताळं

ननु परिपालिंप रारा देव श्रीवासुदेव वरद ॥ननु॥
अनंतमु देश कालादुलचे परिच्छित्ति लेनि निधिरव्यय
निष्कल ब्रह्ममैन ॐकार प्रणवनाद स्वरूपुडवे ॥ननु॥
प्रत्यक्ष प्रमाणालचे इदमित्थमनि ऊहिंप
शक्यमु कानि अव्यक्त स्वरूप हरिदास हृद्वसन ॥ननु॥

61) खमाच् - रूपक ताळं

आ हरिदास सन्निहितुनितो ना प्रसक्ति चेयवे ॥आ हरि॥
नॆरनीदु पदमुले पट्टितिनम्म मात महेश्वरि ॥आ हरि॥
नादबिंदु कळल रूपमै दश नादालचे रंजिल्लु वेणुगान
मूर्तियट वेदविदुडु सुखदुःखादि द्वंद्वातीतुडैन ॥आहरि॥

62) श्रुतिरंजनि - चापु ताळं

नामजपमे नी नाम गुण संकीर्तनमे ना जीवाधारमु ॥नाम॥
सकल मंत्र राजमगु वषट्कारमु नीवुगा विराजिल्लेवु ॥नाम॥
अक्षर परब्रह्म स्वरूप विभवाल वॆलुगॊंदु
हरिदास हृदय सदय विनरादय्या ना विनति ॥नाम॥

63) जगन्मोहिनि - चापु ताळं

नी पॊंदु कोरितिरा राम नम्मि चॆडिन वारु लेरुरा ॥नी॥
मनयिंद्रियालकु अनूह्यमैन सर्वांतर्यामि ॥नी॥
सदा सन्निहितुडवय्यू नीचरण दासुलकु, अव्यक्तमूर्तिवे
आश्चर्याद्भुताल कलुग जेयु अखंड रूप अविनाश श्रीश ॥नी॥
आनंदरस परिपूर्ण अनादि पुरुष नीवे दैवमु दिक्कु नाकु
प्रशांति निलयम श्रीहरिदास कैवल्य निलय श्रीनिलय ॥नी॥

64) नवरोज् - त्रिपुट ताळं

शोभिल्लु सदानंद स्वरूप श्रीहरिदास शुभप्रद ॥शोभिल्लु॥
भक्ति मुक्ति दायकमु सर्व पाप हरमु
नीपद पंकजमुलु शिरोधार्यमु लंदुरे ॥शोभिल्लु॥
सर्व व्याप्तमै निर्मल निश्चलाकाशमु वलॆ,
सर्वात्म भावमुचे नॊप्पु कैवल्य स्वरूप ॥शोभिल्लु॥

65) सारंग - आदि ताळं

एको नारायण यनु सत्कीर्ति गल श्रीहरिदासार्चित ॥एको॥
मुमुक्षुवुलचे पॊंददगिन परमात्म तत्त्वमु
नीकडने दॊरकुनुरा परम पुरुष भव भंजन ॥एको॥
जन्म रहितमैन निश्चल परब्रह्म तत्त्वमुचे तनरुचु
बृहत्तेजः पुंजमुतो सर्वत्र प्रत्यक्षमगु जगद्रक्षक ॥एको॥

66) सावेरि - आदि ताळं

चित्त शुद्धि कलिगिंचे नी दय मात्रमे चालुनुरा राम ॥चित्त॥
त्रित्र्यैक कूट निवास प्रख्याति गॊन्न श्रीहरि जगन्निवास
ई जगत्तंत सुप्रकाशिंप जेयुज्योतिर्मय शोभिल्लु ॥चित्त॥
सत्य ज्ञानानंद स्वरूपमु नीवे सद्बुद्धिकि साक्षि स्वरूप
साक्षि भावनारायण अक्षर परब्रह्म श्रीहरिदास पूजित॥चित्त।

67) केदार - चापु ताळं

सत्य प्रमाणमैन सत्य ज्ञानानंद सद्गुरुडवेरा ॥सत्य॥
नित्यमु शुद्धमै जितेंद्रियुलैन श्रीहरिदासुलकु ॥सत्य॥
निर्मलाकार निर्विकारि निरंजन नित्य मुक्तुडवे नीवु
मनसु निलिपि पूजिंपनि ई जन्ममेल ओ जगद्विलक्षण ॥सत्य॥
पंच मुद्रलु लक्ष्यमु सुदृष्टि भावमुलचे गम्यमु,
नी परतत्त्वमु ज्ञानोदय दायकमुरा ओ सत्य संध ॥सत्य॥

68) कापी - आदि ताळं

सुखदुःख द्वंद्वातीत हे सद्गुरो श्रीहरिदास हृन्निवास ॥सुख॥
ज्ञानेंद्रिय कर्मेंद्रियालु स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरालु
मनसु बुद्धि चित्त्यहंकारालकु विलक्षणमैन सर्वांतर्यामि ॥सुख॥
अरिषड्वर्गालु पंच भूतालु पंच प्राणालु शब्द स्पर्श रूप
रस गंधालकु विलक्षणमै विभिन्न रूपाल विराजिल्लु विराड्रूप ॥सुख॥

69) मोहन कल्याणि - आदि ताळं

पुट्टुट चच्चुटलु लेनि चोटु नीचोटनि तॆलिसितिनय्य ॥पुट्टुट॥
स्वयंप्रभव श्रेयोदायक श्रीहरिदास नुतुडवट ॥पुट्टुट॥
लय कारण हेतुवु नीवेरा समस्त जन्म कर्म वासनलकु,
जन्म कर्म निवारकमैन अभूतुड वनबडु हरिवट ॥पुट्टुट॥
नाम रूप विवर्जितुडवय्यु, उपाधुलचे बहु रूपिग भासिल्लु
अविच्छिन्न अक्षय परब्रह्मवु प्रणवनाद रूपुडवु नीवट ॥पुट्टुट॥

70) नादनामक्रिय - जंपॆ ताळं

एमि चेतुरा राम नेनेमि चेतुरा साकेतराम ॥एमि॥
कोरिकोरि कॊलिचिन दैवमु नीवंटिनि गदरा राम
परिपरि विधाल पलुकरिंचिना पलुक वेमिरा राम ॥एमि॥
मरि मरि मनसार वेडिति निन्ने, मा यिंटि दैवमंटिने
दरिचेरि ई हरिदासुनि पॊंकमुगा परिपालिंच वेमिरा ॥एमि॥

71) कांभोजि - आदि ताळं

निगमागम सार योगिहृद्यान गम्य परम गम्य ॥निगमाग॥
नित्य दिव्य तेजोप्रकाश माया निर्मित नाना रूपाल
विलसिल्लु विश्वंभर, विश्वस्वरूप तव पद दासोहम् ॥निगमाग॥
प्रभुवु नीवेरा ई विश्वमुनु भद्रमुग नेलु विश्वनाथ
श्रीहरिदास विनुत विज्ञान प्रद तव पद दासोहम् ॥निगमाग॥

72) देशि - त्रिपुट ताळं

नंद नंदन आनंद सदन हरि मुकुंद नयनारविंद ॥नंद॥
आनंदमदे कनुलुंडिन कनवलॆ कमनीय गात्रुनि
अंदचंदा लॊलुकु नखशिख पर्यंतमु महदानंदमदे ॥नंद॥

चिदानंदमदे जगदानंदमु करमुलुंडिन संपूजिंप वलॆ
करमुलुजोडिंचि, श्रीहरिदास वंद्युनि चिन्मयानंदुनि ॥नंद॥
ब्रह्मानंदमदे परमानंदमु वीनुलुंडिन विनवलॆ
विश्रुत मतितो, विनुत गुणशीलुनि विशुद्ध चरितमंत ॥नंद॥

73) वसंत - चापु ताळं

एलुवाडवु नीवनि नन्नेलुवाडवु नीवनि ॥एलु॥
निन्ने कॊलिचॆदरा देवदेव वेदवेद्य ॥एलु॥
कॊलिचि चॆडिनवारु लेरनि विन्नानु गदरा
नाडु गजेंद्रुनि गाचिन घनुडवनि विंटिने ॥एलु॥
पिलिचिन पलिके दैवमु नीवनि नी विख्यातिनि विंटि
पांचालिनि आदुकॊन्न अनाथ नाथुडवनि विंटिने ॥एलु॥
मॆच्चिन मेटि दैवमु नीवनि नी गरिम मरि मरि विंटि
त्यागराजादि हरिदासुलु कोरि कॊलिचे दैवमंटिने ॥एलु॥

74) मार्गहिंदोळ - आदि ताळं

श्रीवेंकट निवास श्रीनिवास, नी सरि दैव मॆवरुरा ॥श्रीवेंक॥
मुक्तुडवु नीवे ममत बंधमनु माय नुंडि
मुक्ति निच्चु सत्य धर्म स्वरूपुडवे हे श्रीविभावन ॥शीवेंक॥
सुकृतवंतुलु श्रीहरिदासुलु धन्युलैरि गादे
उल्लमुललर नीगुण गान संकीर्तनमु चेसेरुरा ॥श्रीवेंक॥

75) असावेरि - आदि ताळं

निरवधिकानंद अनंत नामाख्य पाहिमां पाहि प्रभो ॥निरवधि॥
भजरे नारायणं मानस भजरे श्रीसत्य नारायणं श्रीदम् ॥निरवधि॥
हिरण्यगर्भुनकु वेद ज्ञानमु नीसंकल्प मात्रान प्रसादिंचिन
सृष्टि स्थिति लयकारक भूतात्म भूत भावन श्रीहरिदास वरद ॥निरवधि॥

76) सौराष्ट्र - त्रिपुट ताळं

मनो बुद्ध्यात्मलतो अनिशमु हरिदासुलु यजिंचेरुरा ॥मनो॥
परमानंदमदे आनंद धाममु नीवे यनुचु स्मरिंचेरु ॥मनो॥
नीयंदे त्रिगुणमय जाग्रत्स्वप्न रूप सृष्टि मिथ्यैननु
अधिष्ठान सत्तचे सत्य प्रतीतमगुनु गदरा श्रीकर श्रीमान् ॥मनो॥

77) अमीर्कल्याणि - त्रिपुट ताळं

पलुक वेमिरा राम नापै अलुग वलॆना ॥पलुक॥
पलुक मुत्याल सरुलु विरिगि पोवुना ॥पलुक॥
सुलभ नामांकित श्रीहरिदासुल ब्रोव रारा
तॆलुपवेमि नीदरि चेरु दारि, भक्त सुलभुड वटने ॥पलुक॥

78) तोडि - जंपॆ ताळं

दारिनि सरिग गनि नी दरि चेरितिरा ॥दारि॥
परि परि नीगरिम गनि नीदरि मरिगितिरा॥दारि॥
मरि मरि नी परिचर्य चेयु नी दासुड हरि दासुडने
सिरि विरिंचि शिवादुल परितुष्टुल जेयु प्रशांति निलय ॥दारि॥

79)कर्णाटककापी - रूपक ताळं

परिताप हरे पालिंपरा राम ॥परि॥

करि वरद वरसुर नुत सुचरित ॥परि॥
नी गरिम नी महिम परिकिंप नी सरि मरि लेडे
हरिदासाघ विदूर घनानघ प्रशांतिप्रद ॥परि॥

80) देशि - रूपक ताळं

सर्व लक्षण गुण संजात सर्व जन संरक्षक ॥सर्व॥
सर्वमु नीवै सर्वमु व्यापिंचिन सर्वनामिवि ॥सर्व॥
सर्व प्राणुलकु सद्गति जूपु सर्वेश्वर रक्षिंपवे
सर्व जीवांतर्गत, प्रशांति निलय श्रीहरिदासनुत ॥सर्व॥

81) सुरटि - त्रिपुट ताळं

कलि कल्मष विदूर विन रादा ना मनवि ॥कलि॥
तॊलिसो तॊलियको ने जेसिन नेरालॆंचकुरा ॥कलि॥
तॊलिविगा सत्यमुनु प्रबोधिंचे सद्गुरुडवे
अलवेलु मंगाधिप श्रीहरिदासविभो जगद्विभो ॥कलि॥

82) शुद्धसावेरि - जंपॆ ताळं

कलिलो तरिंचरे तॊलिसि हरि चिंतनतो ॥कलि॥
कलिमि लेमुलु कावडि कुंडलनि तॆलियरे ॥कलि॥
कॊलिचि कोरिन, वरदुडवनि कॊलिचेरु हरिदासुलु
बलिनि बलिमितो ग्रसिंचिन त्रिविक्रम प्रशांति निलय ॥कलि॥

83) श्रीरागं - आदि ताळं

चीकु चिंतल वीडरे चेयॆत्ति म्रॊक्करे हरिकि ॥चीकु॥
वेकुवने लेचि वेद वेद्युनि वेंकटेशुनि वेडरे ॥चीकु॥
लोकुलु पलुकाकुलु पनिकिरानि पलुकुल विन नेलको
ए कुलमैन नेमि कुलपति श्रीहरिदास सेवितुनि वेडरे ॥दारि॥

84) खरहरप्रिय - आदि ताळं

नीपदमे गदा मानिनिनि पाप निधनमु गाविंचिनदि ॥नीपद॥
नीपद गरिम गनि नी दरिये सदा सरिग मनितिनिगा ॥नीपद॥
नीपद दासुड मापापाल गनि गाव रारा श्रीहरि दासाश्रय
नीपदमे गदा परिपरि परिकिंप सदा प्रशांति धाममु गदा ॥नीपद॥

85) कल्याणि - चापु ताळं

नीसरि नीवे गदरा सदा सरिग गावग रारा राम ॥नीसरि॥
नीसरि गरिम गल मग रायुनि गननिल निक ॥नीसरि॥
नीसरि धीरुलमनि परिपरि परिहसिंचु वारल ग्रसिंचेवु
नीसरिलेनि नीगरिम परिगणिंचिन हरिदास जनुल गावरारा ॥नीसरि॥

86) हरिकांभोजि - आदि ताळं

मद मात्सर्याल मानि सदा सरिग मनितिनि गदरा ॥मद॥
सदयुडवु सदा सहृदयुडवु गदरा श्रीहरि ॥मद॥
सदा नी दासुडने ना मदमणचु वाडवु नीवे गदा
पदमुलने पट्टिन हरिदासुड नीगुण गानमे चेयुदु ॥मद॥

87) षण्मुखप्रिय - आदि ताळं

सदा मनितिनिरा राम नीपद दासुनिगा ॥सदा॥
सदा मानिनी ममकारमु मरिगि चॆडितिरा ॥सदा॥

नीदासुनि ई हरिदासुनि गनि करुणिंचरा
श्रीद नी सन्निधिये प्रशांति निधानमंदुरु ॥सदा॥

88) बृंदावनि - आदि ताळं

परम पुरुष परमेश परतत्त्व प्रकाशुडवे नीवु ॥परम॥
परुल परिहासाल प्रस्तुतुल परिगणिंच नेरनु ॥परम॥
पुराण पुरुष पुराकृतमुचे निनु स्मरिंच नोचिति
पुरुषार्थ सिद्धिकन्न पुनीतमैन पुण्यतीर्थ प्रशांतिप्रद ॥परम॥

89) सिंधुभैरवि - चापु ताळं

कादने वारॆवरु नीवु करुणिंच दलचिते ॥कादने॥
वेद वेद्युडवनि वेनोळ्ळ पॊगिडेरु निनु ॥कादने॥
ऎदनॆल्ल नी तत्त्वमे पर्वियुंडॆने ओ परमात्म
नीनाम स्मरणे श्रीहरिदासुल तारक मंत्रमु ॥कादने॥

90) बिंदुमालिनि - आदि ताळं

ब्रोव मनसु गलुगु नेमो ना मनवि विनग विनग ॥ब्रोव॥
त्रोव तॆलियनि ननु संसारावनि संचरिंचु ननु ॥ब्रोव॥
म्रॊक्क दगिन वेल्पुवे वेदनावेदनाल बापु भगवान्
म्रॊक्कुबडिकैन श्रीहरिदासुडैन ना केलूनि दारि जूपरा ॥ब्रोव॥

91) पूर्वीकल्याणि - चापु ताळं

शिव केशवुल भेदमॆंच दगुने ॥शिव॥
शिव भक्तुडे रामुडनि अरयरे ॥शिव॥
शिवुडेरा राम भक्तुडु सदा शिवंकरुडु
शिव शिव यनिन शमिंचु हरिदास तापमु ॥शिव॥

92) टक्का - आदि ताळं

हरिहरि यन हरिंचुने अरिषड्वर्गमु अरय ॥हरि॥
परिपरि हरिने कोरि कॊलिचेरु सिरि विरिंचि हरुलु ॥हरि॥
नरहरि करिवरद करुणिंचर सरिग सरगुन
हरिगुण गानमु चेयुनु हरिदास परिवारमु ॥हरि॥

93) शंकराभरणं - आदि ताळं

अंतकु आदिवि अनादिवैन अविनाश हरे पाहिमाम् ॥अंतकु॥
अंतकु सृष्टि स्थिति लय कारक सर्व व्यापक श्रीवासुदेव ॥अंतकु॥
स्वयं प्रकाशचैतन्य स्वरूप संकल्प मातान कमलजुनकु
वेदार्थान्नि प्रबोधिंचिन प्रज्ञाननिधे प्रणतार्तिहर हरिदासप्रभो
शरणं तव चरणं हे सच्चिदानंद सद्गुरो पाहिमाम् पाहि ॥अंतकु॥

94) श्रीरागं - आदि ताळं

श्रीहरे! मोक्ष पुरुषार्थ स्वरूप पाहिमाम् ॥श्रीहरे॥
विषयमुल वीडरो, विषय वलयमैन संसारमु
क्षणिकानंदमु खंडखंडमुल जेयु ॥श्रीहरे॥
विषय निरपेक्षमगु अन्यमु उत्तममैन ज्ञानमु
सच्चिदानंदमु श्रीहरिदास चिदानंद रूपमैन ॥श्रीहरे॥

95) गुंडक्रिय - चापु ताळं

भक्तुल पालिट भाग्यवानुडु भद्रगिरीशुने भजिंपरे ॥भक्तुल॥

केवल निराकारमु निष्कलंकमैन श्रीहरि तत्त्वमु
सच्चिदानंद घनमु ज्ञान घनमु अखंडमनेरु ॥भक्तुलु॥
निंगि वोलॆ अमूर्तमु कूटस्थमैन चैतन्यमु श्रीहरिदास नुतुडु
देश कालावधुलकु अतीतुडु, नित्य मुक्तमैन निधिरव्ययुडटने ॥भक्तुल॥

96) अठाण - आदि ताळं

मोक्ष पुरुषार्थ प्रदमैन ब्रह्म पदार्थमु नीवेरा अक्षर ॥मोक्ष॥
सामान्युलकु साकारमु निर्मल चित्तुलकु निराकारमुग
सकल जन्म पुण्य परिपाक रूपमैन पुण्यतीर्थ पुंडरीकाक्ष ॥मोक्ष॥
श्रीमद्भागवत मंगळश्लोक तात्पर्यमगु तत्त्व प्रकाश
श्रीहरिदासार्चित चित्तोपरति निच्चु निरंजन नीरजाक्ष ॥मोक्ष॥

97) कांभोजि - आदि ताळं

केवल कृष्ण परब्रह्म परमात्मवु नीवेरा ॥केवल॥
केवल ज्ञानमय करुणामय सदय हृदय ॥केवल॥
श्रीहरि नी अनुग्रहमुन्न अहम् ब्रह्मास्मि
अनु स्फुरण चित्तोपरति कलुगुने सदा सरिग ॥केवल॥
शरीरादि प्रपंचमु तत्संबंध चित्त प्रवृत्तुलु
हरिंचु हरिदासनुत अच्युत अनंतश्री ॥केवल॥

98) साम - चापु ताळं

अरयरो सृष्टिकॆल्ल आत्मयैन अनंतश्रीनि श्रीहरिनि ॥अरयरो॥
हरि विरिंचि शिवादुल स्वरूपाल अलरु आर्युनि ॥अरयरो॥
निस्सारमु संसार चक्रमुन परिभ्रमिंचु प्रजलारा
त्रिकरण शुद्धिग भजिंपरो भक्त वत्सलुनि भक्त वरप्रदुनि ॥अरयरो॥
अखंड तत्त्व माकंदमु हरिदास वत्सलुडु
अखंड दयारस मूलकंदमु अमरेश्वरुनि ॥अरयरो॥

99) तिलक् मोधक् - आदि ताळं

वस्तुवुलंतकु मूल वस्तुवु परावस्तुवु नीवेरा ॥वस्तुवु॥
परावस्तु विस्तारमे प्रपंच मनेरु प्रबुध वर्गमु ॥वस्तुवु॥
अखिल चराचरात्मक वस्तुविस्तार मूल कारकुडवु नीवे गदरा
अखंडानंदाश्रम सुरनराश्रय सदाश्रयुडवे समस्तानिकि ॥वस्तुवु॥
शब्द ब्रह्म परब्रह्मवे निन्ने अभ्यर्चिंतुनिक
सत्य ज्ञानात्मक शाश्वत ब्रह्म, हरिदास नुत ॥वस्तुवु॥

100) केदारगौळ - रूपक ताळं

त्रिकालज्ञ त्रिविक्रम त्रिभुवनेश नमो नमः ॥त्रिकाल॥
सच्चिदानंद जगद्पावन जगद्गुरो जगद्वंद्य
नित्य चैतन्य प्रकाश बृहदीश ईश भद्रगिरीश ॥त्रिकाल॥
निर्विकार निधिरव्यय नित्यमु सत्यमैन सद्ब्रह्म
सर्व व्यापक श्रीहरिदासेश्वर प्रस्तुति चेसेरु निन्ने ॥त्रिकाल॥

101) द्विजावंति - रूपक ताळं

चैतन्य प्रभो श्रीहरे दासोहं तव पद दासोहम् ॥चैतन्य॥
सर्व व्यापक वासुदेव नीलीला कल्पितमैन
विश्वमंदु विविध रूपल विराजिल्लु विराड्रूप ॥चैतन्य॥

दारुण कलि कल्मषालकु चिक्कुंड ननु जूडरा
परतत्त्व प्राप्तिकै प्रकीर्तिंचेनुरा श्रीहरिदास विभो ॥चैतन्य॥

102) अमृतवर्षिणि - आदि ताळं

नीकृष्ण तत्त्वमुने आश्रयिंचुदु भक्ति भावमुतो ॥नी॥
नीमूर्ति कनुलकु मनोबुद्धुलकु मनोहरमै मनुनटने
नीनिर्मल स्फटिकाकारमु निरावरण सच्चित्सुख गर्भमनेरु ॥नी॥
अप्रतिमान प्रज्ञान प्रदीप्त चैतन्य स्वरूप केवल चिन्मयानंद
श्रवण स्मरणमुलचे हरिदासुल हृषीकमुलु आह्लादमंदुने ॥नी॥

103) सरसांगि - आदि ताळं

माबोंट्लकु तॆलियुना नीमूर्ति निर्मल चिन्मयानंद ॥मा॥
निष्क्रियुडवय्यू मायाशक्तिनि प्रेरेपिंचु क्रियमानुडवु गदरा
हे चैतन्यमूर्ते कलुगु नटने ऒक प्रेरण नी सान्निध्यमु वलन ॥मा॥
कल्पांतमंदु लीनमौ अनिर्वचनीय माय, मरल नी प्रेरणचे
अभिव्यक्तमगुनट कल्पादियंदु, ओ श्रीहरिदासार्चित सुचरित ॥मा॥

104) कल्याणि - आदि ताळं

मायातीतमु चैतन्य स्फोरकमैन परमात्मवे ॥माया॥
सत्व गुणमु पूनिन लीला विग्रहधारे श्रीहरे ॥माया॥
अनंत महिमा विलासाल युग युगाल नवतरिंचु
लीला विग्रह श्रीराम श्रीकृष्ण परात्पर, परब्रह्म ॥माया॥

105) आनंदभैरवि - चापु ताळं

निष्काम कर्मनुष्ठानुलकु निश्शेष पुण्य स्वरूप ॥नि॥
लक्ष्मिकिरवैन श्रीकरहरे श्रावणमेघ श्यामलांग ॥नि॥
तनरु नव मोहनांग सारंग सर्वांतरंग कावेटिरंग श्रीरंग
उपासकुल हृदय पद्माल परमानंदामृत वर्षमु कुरिपिंचु
शुद्ध तत्त्वमय श्रीहरिदासनुत अप्रमेय वरद श्रीद नीकु नीवेरासाटि ॥नि॥

106) रीतिगौळ - आदि ताळं

निनु चूचि तरिंचुटे ई हरिदासुनि ध्येयमु ॥निनु॥
चिदानंद दायक सुमनोहरमु नीदिव्य मूर्तट ॥निनु॥
लिंग शरीर धारुलु जीवुलु, जनन मरणादि दुःखालु
तप्पवुग, अग्राह्यमु जगाल नी सृष्टि वैविध्य कल्पन ॥निनु॥

107) आरभि - आदि ताळं

आश्रितजन मंदार नी सन्निधि सदा पॆन्निधि ॥आश्रित॥
इत्तुवु विनतुलैन हरिदासुअलकु अयाचितमुग पुरुषार्थाल
निष्काम भक्तुल अप्रमेय वरद परमानंद मोक्ष प्रदात ॥आस्रित॥
नाकमंदलि पारिजातम, फल प्रदातवट कामितार्थुलकु
निरुपम निरवधिक सुखप्रद अंदरिनि दरि चेर्चु वरप्रद ॥आस्रित॥

108) तोडि - चापु ताळं

कॊर्केलु तीर्चेरु कॊंदरु देवतलु कोरि कॊलिचि नंतने ॥कॊर्केलु॥
कोरि नंतने मनसार निन्ने नीविच्चुकॊनेवु मुदमुग ॥कॊर्केलु॥
हरि दासार्चित शुद्ध चैतन्य स्फूर्तिवि नीवंटिनि गदरा
निन्नरय नेरनि अन्य देवताराधकुलु अधमुलु अरय ॥कॊर्केलु॥

109) केदारगौळ - आदि ताळं

आत्मानुभवमुनु अनुग्रहिंचु आत्मारामुडवे ॥आत्मा॥
जीव रूपान संसारमुन बडद्रोयु वाडवु नीवेरा ॥आत्मा॥
नीदैश्वर्यमु निर्देशिंचुनु अजरुद्रादुल वारिवारि स्थानमुलंदु
निग्रहिंचुनु तेजोवंतुलु शंकरादुल नीदु अशेष तेजस्संपदलु ॥आत्मा॥

110) मायामाळवगौळ - आदि ताळं

निन्नरयु वाडवु नीवेरा हे प्रज्ञा निधे श्रीनिधे ॥निन्नर॥
निरतमु नीनाम संकीर्तनमुचे, भवहरमगुने ॥निन्नर॥
अज्ञान जनित रजोगुण रूप बल दर्पाल प्रदर्शिंचेरु
ऐश्वर्योन्मादुलु, महदैश्वर्य नीवो आत्मज्योतिवि ॥निन्नर॥
भगवच्छब्दमुनकु परमार्थमैन श्रीहरिदास विभो जगद्प्रभो
सिरि किरवैन श्रीविभावन मायातीत स्वरूप स्वयंज्योतिर्मय ॥निन्नर॥

111) बिलहरि - चापु ताळं

तिरुमलेशुनि तिलकिंचिन धन्युडगुने ई हरिदासुडु ॥तिरु॥
वॆलुगु भानु द्युति पगिदि किरीटमु मकुटमुन,
शोभिल्लु कस्तूरि तिलकमु चॆलुवुग ललाटमुन ॥तिरु॥
स्रविंचु करुणा रसांबुधि, सूर्य चंद्रुलै चॆलंगु कंदोयि
वॆलुगु दरहास वदनमु रम्यमगु नासा पुटमुलतो ॥तिरु॥

112) बृंदावनसारंग - आदि ताळं

रुचिरांगद नी अंदचंदा लॆंच तरमा ॥रुचि॥
चॆक्कुल जिगिगॊल्पुने मकराभ कुंडल द्वयमु
सॊगसुग मॆरयुने कमनीय कंठमुन कौस्तुभमणि ॥रुचि॥
वॆलुगॊंदुने वक्ष स्थलमुन इंपैन श्रीवत्स चिह्नमु
हे वनमालाधार श्रीहरिदास मनोहर मुरहर श्रीकर ॥रुचि॥

113) मोहन - आदि ताळं

मारजनक माधव नीकु मंगळमु ॥मार॥
विंतल कॆल्ल विंतैन विश्वरूप विश्व मोहन ॥मार॥
भुवनाल पूजनीयुल कॆल्ल पूजनीय
मोहनमुलन्निटिकन्न सम्मोहन ॥मार॥
कांतिनिधुल कॆल्ल कांतमु मधुवुल कॆल्ल सुमधुरमु
निद्दपु नीटुलंदु नॆर नीटुवै नॊगडु श्रीहरिदास नुत ॥मार॥

114) नायकि - चापु ताळं

मरि मरि मननमु चेयु वारिनि मुरिपिंप जेसेवुर ॥मरि॥
नी रूपमु अत्यद्भुतमु अतुलित सौंदर्य लहरि
परब्रह्मानंदमुग तनुवुलु पुलकरिंप जेयुने ॥मरि॥
रम्य मनोहर कनुविरि, कनुलकु आनंद भाष्पाल
घनमुग कुरिपिंचु श्रीहरिदास मनोज्ञ मुग्धमोहन ॥मरि॥

115) सारंग - चापु ताळं

सुलभ साध्युड वनेरु साधकुलैन सद्भक्त गणमु ॥सुलभ॥
प्रेमातिशय रूपमैन नीयॆडल भक्तियुन्न ॥सुलभ॥
पुरंदर रामदास अन्नमय्य त्यागराजादि हरिदासुलु कॊलुचु

सौंदर्यैक रस स्वरूपुडवु नीवेगा सारसाक्ष सारंग ॥सुलभ॥
कर्म ज्ञान योगमुल कंटॆनु गॊप्पयनि सद्भक्ति कॊलिचेरु
पराशर नारदादि योगीश्वरुलु, अत्युत्तममंद्रु भक्ति योगमु ॥सुलभ॥

116) सिंधुकन्नड - आदि ताळं

नीयंदु भक्तिये प्रगतिकि प्रमाणमु प्रति जीविकि ॥नीयंदु॥
दूरान फलिंचु स्वधर्माचरणमनु निष्काम कर्म योगानुष्ठानमु
अव्यक्तमु अमानुष गोचरमु उपनिषत्प्रतिपादित ब्रह्म ज्ञानमु ॥नीयंदु॥
ऐन्नग कडु अरुदिललो निरीषणुलु निरासक्त कर्मुलु
भक्ति गल हरिदासुलकु अनुत्तममैन लभ्यमट नीवु ॥नीयंदु॥

117) खरहरप्रिय - चापु ताळं

सद्योमुक्ति चेकूरु सद्भक्ति संपूजिंचिन ॥सद्यो॥
हरि भक्ति कथा रसामृत झरिनि सॊक्करे
सुनायासमुग समाधि सिद्धि स्थिरमगुने ॥सद्यो॥
हरि चरणारविंद भक्ति रसात्मक चित्तमु
श्रीहरिदासुल सॊत्तनेरु सुर नर वानरुलु ॥सद्यो॥

118) आभेरि - चापु ताळं

नीपाद सेवये सकल पुरुषार्थाल निच्चु ॥नीपाद॥
ना प्रापु नाप्राणमु नीवे गदा शरणगत त्राण ॥नीपाद॥
उल्लमंदु जॊच्चॆ सततमु नीनाम संकीर्तनमु
नी सौंदर्योपासनचे मदि पुलकरिंचु निरतमु ॥नीपाद॥
पारायण चेसेरु नी लीललने अंतट हरिदासुलु
सर्वाभीष्ट प्रदायक सदा सन्नुतिंचेरु निन्ने ॥नीपाद॥

119) शहन - आदि ताळं

ननु करुणिंच रावेरा नादु दैवम ॥ननु॥
क्लेश परचु वात पित्त श्लेष्मादि रोगालु,
व्याकुल परचु राग द्वेष मनो क्लेशालु ॥ननु॥
नी पदारविंद ध्यान संपद नाकॊसगरा
सिरि विरिंचि हरादुल ब्रोचु हरिदासनुत ॥ननु॥

120) रेवति - आदि ताळं

नी दय कलिगिन जालु जनुलकु ॥नी दय॥
आधि व्याधुलु उपशमिंचुट तथ्यमटने
निरतिशय सुखस्वरूप मोक्षमंदेरु ॥नी दय॥
ऎंदरो हरिदासुलु जीवन्मुक्तुलट
नीकु भक्तुलै विषय विरक्तुलैन वारलु ॥नी दय॥

121) कांभोजि - आदि ताळं

परमोन्नत भक्ति स्थायि नंदरे हरिदासुलारा ॥पर॥
इंतकन्ना कावलसिन संपद्विभवमु लेदिललो ॥पर॥
निगूढात्म वर्तनुलु हरि पादोदक तीर्थ संसेवितुलु
जलक माडेरु सततमु ब्रह्मानंद पारावार पूरमुन ॥पर॥

122) रेवगुप्ति - चापु ताळं

ना भवतापाल नणचरा हरिदासनुत ॥ना॥

नी पावन सन्निधि चरिंचु सौभाग्यमु
ना पादालकु प्राप्ंइचुना परात्पर ॥ना॥
कलुगुना चेतुलारा विरुल पूजिंचु पुण्य फलमु
वीनुलकु विंदौनर्चु नी संकीर्तनमु विनु भाग्यमु ॥ना॥

123) नारायणगौळ - आदि ताळं

नी चिद्रसात्मक चिद्रूपमु प्राविर्भविंच नीयरा ॥नी॥
मानसिक शारीरक रोगाल कृशिंचु ना हृदिनि ॥नी॥
नीपाद तुलसी कुसुम परिमळ गंधमु
आघ्राणिंचु अद्रुष्टमु ना कब्बुना स्वामि ॥नी॥
नीगुण गणाल कडुपार पॊगडिन चालुनट
मेनु पुलकरिंचेनु हर्ष भाष्पाल वॆलिगेनु ॥नी॥

124) कानड - चापु ताळं

ओ सद्गुण सांद्र रामचंद्र नीकपकीर्ति वलदु सुमा ॥ओ सद्गुण॥
निनु कादनि नीयॆड विमुखुलैन वारु सुखमुगा उंडिरे
नीपै प्रीतिगॊन्न नेनो परिपरि परितापाल पालय्येनुरा ॥ओ सद्गुण॥
नीकरुणा कटाक्षाल नी कडकंटि चूपुल ऒकपरैन
नोचुकोलेनि वाडनंटिने श्रीहरिदासनुत सुचरित ॥ओ सद्गुण॥

125) यदुकुलकांभोजि - चापु ताळं

पलु माटलतो पनि येमिरा पतित पावन राम ॥पलु॥
ननु करुणिंच सरगुन रारा सहजगुण राम ॥पलु॥
नीवे यंटिने चॆलियलि कट्ट आ कडलेनि दुःखजलधिकि
नीकन्न दिक्केवरुरा दुस्तर भवार्णवमु दाट ॥पलु॥
नीदु चरणाल व्रालि पुष्प गुच्छाल प्रीतितो
निन्ननुदिनमु अर्चिंचु हरिदासुड गदरा ॥पलु॥

126) हंसनाद - आदि ताळं

आरोग्य भाग्य मीयवय्या नी आराधनकै ॥आरोग्य॥
नीमूर्ति वैभवमुनु तद्युपासना विधान मरयगोरु
नी तत्त्वोपासन सेयु नीचरण दासुड नंटिनि गदरा ॥आरोग्य॥
यम नियमादि अष्टांग योग निष्ठाचरणकै
अनिशमु यत्निंचु हरिदासुडनु गदरा, नाकिक ॥आरोग्य॥

127) आहिरि - आदि ताळं

नी मुंदे पडियुंड्डु सदवकाशमीयरा ॥नी॥
सूक्ष्म शरीरमैन मनसु निलकडकु तारमॆंचि
आत्मानुभवमुतो अर्चिंचेनुरा आत्माराम ॥नी॥
नीदु उपासनंदु धारणादि योगालंदु अनवरतमु
इंद्रिय मनोबुद्धु लुंचेनुरा श्रीहरिदासुडने ॥नी॥

128) वसंतभैरवि - जंपॆ ताळं

नीदय युन्न चालु नीदासुनकु श्रीहरिदासुनकु ॥नीदय॥
अंतरंगान नी दिव्य प्रभावमु पडसिन धन्युडनु ॥नीदय॥
ध्यानमुलो लीलगा स्फुरिंचु नी रूप विभवमु
धारण सेयुवाडनु गदा ना बुद्धि प्रपत्तुलनु ॥नीदय॥

129) रीतिगौळ - चापु ताळं

नी सौंदर्य विभवालु प्रदीप्तमगु नखशिख पर्यंतमु ॥नी॥
सुंदर मूर्तिने ध्यान योगान यजिंतु नंटिने ॥नी॥
नीवे दिक्कुग गंटिनि चिक्कु लन्निटिनि गॆंटितिनि
नी दिव्य चरणाले शरणंटिने हे हरिदास विनुत ॥नी॥

130) अठाण - चापु ताळं

परिपरि प्रपूजिंचेनुरा परिपूर्ण चंद्र दरहास वदन ॥परि॥
सांद्रानंद रस स्वरूपमु अभिव्यक्तमु चेयरा नाकु ॥परि॥
नी रूपमु सद्ब्रह्म रूपमु केवलमु अतींद्रिय ग्राह्यमट
नी रूप माधुर्यमंदु मरि मरि मरलुकॊन्न श्रीहरिदासुड ॥परि॥

131) कांभोजि - आदि ताळं

प्राप्तिंचुने निर्विकल्प समाधि नीयंदु भक्ति मिक्कुटमैन ॥प्रा॥
परब्रह्म रसास्वाद संपूर्णानुभवमु कलुगु अद्भुतमुग ॥प्रा॥
लय विक्षेप कषाय रसास्वादालु नालुगु विघ्नालुन्न,
तथ्यमुग धारण धृढमगु श्रीहरिदास प्रबुधुलकु ॥प्रा॥

132) देशि - आदि ताळं

मुक्तुलै संचरिंचेरु श्रीशुक नारद हरिदासुलु ॥मुक्तुलै॥
पूर्व संचित कर्मलु संशय विपर्यालु नशिंचु
नी स्वरूप संदर्शनमुचे निरंतर भक्ति तत्परुलै ॥मुक्तुलै॥
बंधालन्नि वीडि परमनिष्ठ कलिगिननु, तप्पदट
ईति बाधलु भुविलो प्रारब्धशेष मुन्नंत वरकु ॥मुक्तुलै॥

133) बलहंस - चापु ताळं

मनोबुद्धुल पट्टरो सिद्ध समाधि पॊंदरो श्रीहरिदासुलार ॥मनो॥
मुक्तिनि बडयुटकै योग वशमु सेयरो प्राणान्नि
नडपरो दानिनि षट्चक्रमु तुंडि ऊर्ध्व मुखमुगा ॥मनो॥
निरागुलै सद्योमुक्ति कोररो, ब्रह्म कपाल मोक्षमै तनरु
वॆलुगुलो सायुज्यमवरो सद्गति यगु हरियंदु ॥मनो॥

134) नळिनकांति - आदि ताळं

ननु कटाक्षिंचु समय मिदेरा राम अभिराम ॥ननु॥
युग दोषालकु जनन मरण युत संसारानिकि लोनुकाक
निनु चेरु सन्मार्ग मेदिरा सद्गुण स्तोम सद्गति नीवेरा ॥ननु॥
परम पवित्रमु, पाप लतलकु लवित्रमु श्रीविष्णु क्षेत्रमु
परम भागवतुलकु पात्रमु नीवेरा श्रीहरिदासनुत ॥ननु॥

135) नीलांबरि - चापु ताळं

नी नाम स्मरण मात्रान धन्युलय्येरु हरिदासुलु ॥नी॥
सरगुन ननु करुणिंचु घडिय दापायॆरा स्वामि ॥नी॥
सर्व भूतात्मक सर्वेश्वर सर्वदा नीगुण प्रस्तुति चेसेरु
भूतक्षेम वृद्धुलकै भुविनि वॆलिगिन भद्रगिरि धाम श्रीराम ॥नी॥

136) शहन - चापु ताळं

प्रसादिंचरा परमात्म विनिश्चितमैन विवेक सारान्नि ॥प्रसा॥
नी विभूतिनि विविध गतुल पॊगडिन चालुनंद्रु अंदरु ॥प्रसा॥

नी चरणालंटिन गंगाभवानिकि कलिगे सर्वोत्तम महिम
नीपुण्य चरितान्ने संकीर्तिंचेरु नी दासुलु श्रीहरिदासुलु ॥प्रसा॥

137) साळगभैरवि - आदि ताळं

सर्वमु सर्वेशुनि स्वरूपमनि विश्वसिंचरो ॥सर्वमु॥
सर्वजीव हृदयेशुडु श्रीहरिदासेशुडे ॥सर्वमु॥
सर्व व्यापकाल कट्टिपेट्टि सरिग विनरो हरि कथलने
सर्वानिकि सर्वदा सद्गति सन्निधि सत्सार्वभौमुडे ॥सर्वमु॥

138) नादचिंतामणि - रूपक ताळं

हरि गुण गान गरिम परि परि विनरे विबुधुलारा ॥हरि॥
विनग विनग रागमु अतिशयिंचु उन्माद मगुनटुल
हरि हरि यनग यनग अंतु चिक्कु हरि यंतरमु ॥हरि॥
विक्षेप रहितमै निरतमु निलुचु बुद्धि त्रिगुण रहितमैन
हरिदासुल हृदयाल विहरिंचु विष्णुवे प्रभविष्णुवु ॥हरि॥

139) मध्यमावति - चापु ताळं

अहरहमु अर्चिंचेरु हरिदासुलु नीनिज दासुलु ॥अहरह॥
सिद्धिंचुनटे श्रीहरि तत्त्वज्ञान प्रकाशमु मुक्त संगुनकु
चिज्जड रूपमै अहंकार मणुगु वासना रहितमगु ॥अहरह॥
चित्तमुन सत्त्व प्रधानमगु काम मणगिननने
नी दर्शनमगु नीदासुनकु, एकाग्रमैन भगवान् ॥अहरह॥

140) धेनुक - आदि ताळं

हरि दर्शनमैन फलोन्मुखमगु कर्म लन्नियु ॥हरि।
हरि पैन भक्ति कलिगिन मनोह्लादमु कडु कलुगु ॥हरि॥
हरिदासुलारा कर्मलु वासना प्रेरितमुलनि तॆलियरे
हरि परमैन कर्मलु वासना क्षयमु चॆंदुनट ॥हरि॥

141) ज्योतिस्स्वरूपिणि - त्रिपुट ताळं

शुभ प्रदमगु श्रीमद्भागवत कथल श्रवण मननमु वलन ॥शुभ॥
शास्त्र सारमु भगवत्कृत्यमु सृष्ट्यादि लीललु अवतारमहिम
श्रीकृष्ण तत्त्वमु भक्तिकि अंतर्भूतमुलैन यिति वृत्तालनेरु बुधुलु ॥शुभ॥
इंतिंतनरादु कलिशक्ति, कुंठित परचु सत्त्वगुण संचयाल,
ऎंतॆंतो यॆंच हरिदासार्चितुनि प्रस्तुति, कलिमल प्रभंजनमु ॥शुभ॥

142) बहुदारि - आदि ताळं

जीवन्मुक्तिकि साधनमे सद्भक्ति यनि ऎंचरो सज्जनुलारा ॥जीव॥
सर्व शास्त्रेतिहास ज्ञानमेल नीयंदु भक्ति युन्न चालुनट
समसि पोवु नीस्मरण वलन घोरमैन संसार ताप भारालु ॥जीव॥
सद्धर्ममुनकु फलमु मुक्तिये, प्रपंचार्थमु कादनेरु
तत्त्व ज्ञानमे देह धारणकु फलमनेरु हरिदासुलु ॥जीव॥

143) लतांगि - आदि ताळं

एकमु अद्वितीयमु सच्चिदानंद ब्रह्म मॊकटे ॥एकमु॥
धर्म जिज्ञासे परमात्म तत्त्वज्ञानमु सुज्ञानमदे ॥एकमु॥
सुज्ञानमे ब्रहमंदुरु औपनिषदुलु, परमात्म यनेरु
हिरण्यगर्भुलु, भगवानुडनेरु श्रीहरिदासुलु तत्त्वज्ञुलु ॥एकमु॥

144) मणिरंगु - चापु ताळं
मूड्डु गुणाल वॆलुगु मुक्ति प्रदायक ननु मरुवकुरा ॥मूड्डु॥
हरिविरिंचि शिवादुल नामाल नलरु त्रिलोकेश त्रिमूर्ति ॥मूड्डु॥
तमोगुणान्वित उपाधितो वॆलुगु शिवुडवु नीवेग
रजो रागात्मक उपाधितो अलरु अजुडवु नीवेरा ॥मूड्डु॥
निर्मल स्फटिकाकार शुद्धतत्त्व प्रकाशमगु उपाधितो
तनरुतत्त्वज्ञानप्रद श्रीहरिदास प्रपूजित पुरंदर ॥मूड्डु॥

145) श्रीरंजनि - चापु ताळं
त्रिकालातीतमै षड्विकार रहितमैन सत्पदार्थमु नीवेरा ॥त्रिकाला॥
नाम रूप रहित ओ परात्पर सर्व व्यापक श्रीवासुदेव ॥त्रिकाला॥
नीवेरा जगद्कारणमु हे सर्वशक्ति स्वरूप श्रीहरिदासेश्वर श्रीहरे
नीदुशक्ति विलासालेग जगद्सृष्टि, यॆन्नग नी लीललॆन्नो मदि पुलकरिंचु ॥त्रिकाला॥

146) शिवशक्ति - रूपक ताळं
शिवं शंकरं शुभकरं परात्परं प्रणमाम्यहम् ॥शिवं॥
नादात्मकं नंदिवाहनं नटभैरवं नमाम्यहं ॥शिवं॥
गंगाधरं गौरीनाथं घोराघ परिहारं पाहिमाम्
अघोरं आनंदभैरवं अप्रमेय वरदं वंदेहम् ॥शिवं॥
शिवस्य हृदयगुम् विष्णुम् श्रीहरिदासनुतं स्मराम्यहम्
श्रीकंठं शांतं शूलपाणिं परात्परं पशुपतिं भजेहम् ॥शिवं॥

147) मलहरि - चापु ताळं
सर्व भूतात्म भूतकृत् नीवु लेनि भूतमे लेदु ॥सर्व॥
सर्व नाम रूपाल परगु भूतालु उपाधि भेदमुवलन
सर्वांतर्यामिवगु ओ हरि नीकु आपादिंचेरु अनेकत्वान्नि ॥सर्व॥
सर्व रूपाललो पॊरलु परमात्मवु नीवेरा श्रीहरिदास सन्नुत
सर्व भूताल सूक्ष्मेंद्रियाल तनरु नी परतत्त्वमु अद्वितीयमु ॥सर्व॥

148) देवगांधारि - चापु ताळं
सुरनर जलचर जंतु रूपाल राजिल्लुने नीदवतारालु ॥सुर॥
षोडश कळा निधिवनि अर्चिंचेरु हरिदासुलु अहर्निशलु ॥सुर॥
मदहंकार पंच तन्मात्रल उत्पन्नमैन एकादशेंद्रियालु
पंच भूतालतो कूडिन षोडश कळलु नी यंशालेग विराड्रूप ॥सुर॥

149) कापीनारायणि - आदि ताळं
आदि नारायण अवतारालन्निटिकि आदिवैन नीकु अभिवंदनालु ॥आदि॥
त्रिगुणातीत त्रिविक्रम त्रिकालज्ञ श्रीहरिदासविभो विराण्मूर्ते ॥आदि॥
सहस्र शीर्षालु सहस्राक्षुलु सहस्र पादोरु भुज वक्त्र कमलाल
सहस्र किरीट मकुट कुंडलाल नलरु महार्ह अजहरार्चित ॥आदि॥

150) गरुडध्वनि - आदि ताळं
मोक्ष प्रदुडवनि प्रस्तुतिंचेरु प्रमुखुलु ॥मोक्ष॥
सूक्ष्म शरीरमु मनसु निलकडकु प्रणव नादान्ने
हृदयान निलिपेनुरा श्रीहरि दासजन रक्षक ॥मोक्ष॥
प्राणायाममुचे दुर्विषय संगतिनि दूरीकृतमु चेसेनुरा,
इंद्रियाल प्रत्याहार मॊनर्चि अनुक्षणमु निरीक्षिंचेनुरा ॥मोक्ष॥

151) बेगड - चापु ताळं

ध्यानमंदु लीलग गोचरिंचु नी रूपमु ॥ध्यान॥
परिपरि बुद्धिनि धारण सेयु श्रीहरिदासुड ॥ध्यान॥
बुद्धि गतमैन दोष परिहारार्थमु अर्चिंचेनुरा निनु
अंतरंगमंदु अनंत भक्ति प्रपत्तुल प्रसादिंचरा ॥ध्यान॥

152) रीतिगौळ - आदि ताळं

सुमनोज्ञमु सुमनोहरमु नी चिन्मय चिद्रूपमु ॥सुमनोज्ञ॥
ध्यानयोग निरतात्मुड नीवाड श्रीहरिदासुडने ॥सुमनोज्ञ॥
दिक्कु नीवे नीदिव्य पद पद्माले प्रशांति प्रस्थानमु
चित्तोपरति नीवेरा सिद्ध समाधि पोंद प्रोत्सहिंचरा ॥सुमनोज्ञ॥

153) शुद्धवसंतं - आदि ताळं

सदा सदाचारुल सांद्रानंद घनैक रसानुभूतिवे ॥सदा॥
सदानंद रसांतरंगुलु हरिदासुल हृषीकेश ॥सदा॥
ज्ञातज्ञान ज्ञेय रूपमुलनु त्रिपुटि भेदाभेदालकु अतीत अद्वितीय
अंतरिंद्रिय ग्राह्यमैन अनंतश्री अप्रमेय वरद सनाथ ॥सदा॥

154) पाडि - त्रिपुट ताळं

केवल शुद्धतत्त्व ब्रह्मवै वॆलुगु येको नारायण ॥केवल॥
त्रिगुणालु साम्यावस्थलो नुंड, कारणमैन सूक्ष्म प्रकृति
लीनमगु नीयंदु, सुस्थिरमुग नुंडुने स्थूल प्रपंचमु ॥केवल॥
प्राकृतमु प्रळयमंदु चिद्विलास रतिनंदि
योगनिद्र नलरु श्रीहरिदास विभो विराड्रूप ॥केवल॥

155) खरहरप्रिय - आदि ताळं

एकार्णवमैन क्षीरार्णवमुन विश्रमिंचु विराण्मूर्ते शरण्यमु ॥एकार्णव॥
लोककल्याणानिकि गोचरमगु उपादान पदार्थमगु अव्यंग
योगि जनुलज्ञान चक्षुवुलकु मात्रमे गोचरमगु वरेण्य ॥एकार्णव॥
कमलजुन किरवैन कमल गर्भ श्रीहरिदासनुत सन्नुतांग
सर्वांतरालकु मूलाधारमुग नॆलवैन वर प्रणवाकार ॥एकार्णव॥

156) सावेरि - चापु ताळं

शुद्ध तत्त्वमय मूर्ति सुज्ञानानंद नीकु वंदनालु ॥शुद्ध॥
शुभ प्रदुडवनेरु कर्म निष्ठुलकु, कर्म समाप्तैन कनबडु ॥शुद्ध॥
उपासना सामर्ध्यमिच्चु आयुरारोग्य वरप्रदात
नी दासुड श्रीहरिदासुडने अव्यक्त ब्रह्मोपासकुडने ॥शुद्ध॥

157) जनरंजनि - चापु ताळं

विश्वरूप विराड्विग्रहानिकि जीव स्वरूपुडवे ॥विश्व॥
विश्वमंत विस्तरिंचि युन्न विश्वात्म विश्वप्रभो
परब्रह्ममुग परगु श्रीहरिदासेश्वर ॥विश्व॥
पंच प्राणालु दशेंद्रियात्मक लिंग शरीराभिमानालचे प्रवृद्धमैन
रजो गुण विकाराल कारणमैन विषय भोगाल विचित्र रचना विशारद ॥विश्व॥

158) विजयश्री - आदि ताळं

जगद्रचन चेपट्टिन कमलजुनकु मार्ग दर्शिवैन जगद्गुरो ॥जगद्रचन॥
मायामोह रागद्वेषभय भ्रांतितति रहित

अनंतश्री अप्रतिहत प्रशांति निलयमु नीवेरा ॥जगद्रचन॥
स्वयं ज्योतिर्मय भानुनि भासिंप जेयु भव्य गुणधाम
परिपरि पूजिंचेरु वर नारद पराशर हरिदासु लंदरु ॥जगद्रचन॥

159) चिंतामणि - चापु ताळं

ए पेरुन वॊलिसिन ए रूपाननुन्न परमात्मवु नीवॊकडिवे ॥ए पेरुन॥
उपाधि वैशिष्ट्यान्नि बट्टि मूर्ति त्रयमुग तनरु चिद्रूप ॥ए पेरुन॥
प्रस्तुतिंचेरु श्रीहरिदासवरदुनि परात्परुनिग
प्रशांति निलयमंद्रु परतत्त्वज्ञुलु निवृत्तात्मलु ॥ए पेरुन॥

160) वागधीश्वरि - चापु ताळं

मोक्षमे शाश्वत सुखमु सुर नर प्रमुखुलकु ॥मोक्ष॥
मोक्ष प्रदात श्रीहरिदास वरदुडे अक्षरुडु ॥मोक्ष॥
प्रपंच प्रवृत्तुल परिभ्रमिंचु पामरुलकु परिकिंप
प्रशांति प्रदात प्रज्ञान प्रभाकरुडे प्रत्यक्ष निक्षेपमु ॥मोक्ष॥

161) नाटकुरंजि - आदि ताळं

सर्व शास्त्राधार आदिदेव वेद पुरुष प्रणमाम्यहम् ॥सर्व॥
अप्रमेय अनंतानंद, नीवु प्रतिपादिंचु धर्ममे आनंद भैरवमु
अजवंदित हरिदासार्चित अरय नीवेगद प्रशांति स्थावरमु ॥सर्व॥
त्रिकालातीतहरि षड्विकार रहित, सत्पदार्थमु सर्व व्यापकमु
सर्वाधारमु सदाश्रयमु नीवेरा परमेश परेश सर्वेश्वर ॥सर्व॥

162) नटभैरवि - रूपक ताळं

अनुक्षणमु सार्थकमगु गति सद्गति सरिग गनरो ॥अनु॥
केवलकैवल्य प्रदमगु वैकुंठ धाममनेरु हरिदासुलु ॥अनु॥
संसारमु क्षण भंगुरमु कडु दुःख दायकमु
स्वल्पमु जीवुल आयुष्कालमु बुद्बुद प्रायमु ॥अनु॥

163) कीरवाणि - चापु ताळं

सनातन नी सद्गुण संकीर्तने सत्साधनमु सद्गतिनंद ॥सनातन॥
नी तत्त्वमु नाकवगतमु चेयरा षड्गुणैश्वर्य संपन्न ॥सनातन॥
आत्मानात्म विवेक ज्ञानमे सांख्यमु तत्फलमगु नी तत्त्वावबोधचे
चित्तोपरति कलुगु, नी दासुडु यी हरिदासुनकु योग संसिद्धिचे ॥सनातन॥

164) नादनामक्रिय - आदि ताळं

हरिनाम संकीर्तने सत्फलार्थुलकु कल्पतरुवु ॥हरि॥
हरिदासुलकु सदा सदाश्रयमु शुभ प्रदमगु ॥हरि।
सदाचारुलु कैवल्यार्थुलकु सनातन सारथि
सदानंद नीसद्गुण प्रस्तुते प्रशांति प्रदमु ॥हरि।

165) भैरवि - चापु ताळं

सरिग नी पद गरिम परिपरि यॆंचनि वारिकि दुर्गतेग ॥सरिग॥
नी चिंतये लेनि वारिकि जीवित कालमॆंतुन्न व्यर्थमेग ॥सरिग॥
हरिदासुल हृदयांतराल अलरु अच्युत हरि
निन्ने चिंतिंचिन खट्वांगुनकु कलिगॆने कैवल्यमु ॥सरिग॥

166) मोहन कल्याणि - जंपॆ ताळं

राम राम ननु मरवकुरा मारजनक ॥राम॥

सीम सीमल वॆदुकनेल हृदय सीमनुन्न ॥राम॥
श्याम श्यामसुंदर श्रीहरिदासार्चित सुचरित
राम राम यनु ननु बिरान ब्रोव रारा ॥राम॥

167) मध्यमावति - रूपक ताळं

सकल रूपालु नीवैन विष्णु मूर्ते नमो नमः ॥सकल॥
सकल बंधाल पटापंचलमु चेयुदुवटने
सकलमु नीवनेरु सुर भूसुर नर वानरुलु ॥सकल॥
सकलानिकि आधारमु आराध्युडवैन अनाथनाथ
सकलानिकि आदिवैन हरिदासावन अवधीश अविनाश ॥सकल॥

168) रीतिगौळ - आदि ताळं

नीदरि चेरि तरिंचॆदनुरा रामचंद्र ॥नीदरि॥
नीसरि मरि ऎवरुरा अद्वितीय चैतन्य ॥नीदरि॥
अविभाज्यमगु ब्रह्म पदार्थमे श्रीमहा विष्णुवु नीवनि
अरमर लेक अहरहमु अर्चिंचेरु हरिदासुलु ॥नीदरि।

169) देशि - आदि ताळं

अविकार अद्वितीय सर्व व्यापक सर्वाश्रयुडवे ॥अविकार॥
अविनाश हरिदासावन पावन नाम पाप विदूर ॥अविकार॥
तपस्सुललो तपस्सु नीवनि तॆलिय जेयु तेजस्स्वरूप
तपमेमि चेसॆनो तरुणी ललाम नीदरि जेर, ओ तारक राम ॥अविकार॥

170) सौराष्ट्र - चापु ताळं

अनंतुडे आधारमु नाम रूपात्मक जगत्तुनकु ॥अनंतुडे॥
अनंत रूपाल अनंत कल्याण गुणाल अलरु ॥अनंतुडे॥
निप्पु नार्पु नीळ्ळुवलॆ, चिम्मचीकटिनि बापु भानोदयमु वलॆ
सर्वपापाल परिहरिंचु हरिदासार्चितुनि नाम संकीर्तन ॥ अनंतुडे ॥

171) आभोगि - रूपक ताळं

मनसु निलुपु मर्ममु तॆलुपरा देवदेव ॥मनसु॥
मनसिजुनि कन्न मरकतांग ना मनवि विनरा ॥मनसु।
मनयिंद्रियाल मरचिन हरिदासुल
मनसुलंदु अलरु अनंतात्म अनंतश्री ॥मनसु॥

172) अठाण - चापु ताळं

आकाराललो निराकार निर्गुण परब्रह्म प्रणवाकार ॥आकारा॥
सर्व व्याप्तिवि सर्व शक्तिवैन सर्वेश्वर सर्वमु नीवेरा ॥आकारा॥
वैखरि उपांशुवु मानसिकमनु जपमुल स्तवनमु चेसेरु
सदा नीपद दासुलु श्रीहरिदासुलु सर्वक्लेश बाधा निवृत्तिकै ॥आकारा॥

173) मोहन - चापु ताळं

जतगूडुने नीध्यान मात्रान मनो निग्रहादि सिद्धुलु ॥जत॥
श्रीराम जयराम अनुचु पलुमारु पलुवरिंचिन ॥जत॥
विनुत गुणशील, विनिनंतने ज्ञान मॊसगु नीशुभ नाममु शुभप्रदमु
कैवल्य प्रदमु कलि युगमंदु, श्रीहरिदासनुत नी नाम जपमुचे ॥जत॥

174) अमीर्कल्याणि - आदि ताळं

मुकुंद मुरारे मुनिजन वंद्य नीवे ना मूलमु ना जीवमु ॥मुकुंद॥

मुक्कंटि रंजक राम ऎंतैना चालु, चालु नी चूपॊकटि ॥मुकुंद॥
सुदर्शनीयमु सुमनोहरमगु मुख नेत्रद्वयाल
तनरु दरहास, सुमधुरहास श्रीहरिदास मनो विकास ॥मुकुंद॥

175) केदारगौळ - आदि ताळं

मधुरं अति मधुरं हरि चरितम् ॥मधुरं॥
असमान शुभदं शुकालापाभिरामं श्रीरामम्
रस गंगाधरं भवहरं भक्तजन पाप विदूरम् ॥मधुरं॥
सुर नर सन्नुतं जगदाधारं कलुष विदूरं विष्णुम्
सुर जन प्रपूजितं श्रीहरिदास हृन्निवसं अजस्रम् ॥मधुरम्॥

176) जयंतसेन - रूपक ताळं

कलनैना कानरावु मनमंता नीवैना ॥कल॥
चलमेलरा राम माकुल दैवमंटिने ॥कल॥
फलमु नीवे नेचेयु नित्य पूजलकु
नील नीरद श्याम श्रीहरिदास लोल ॥कल॥

177) बृंदावनसारंग - आदि ताळं

जय जय श्रीराम जय जय जनाश्रय ॥जय॥
जय जय श्रीकर जय जय जगदाश्रय ॥जय॥
अजवंदित जनवंद्य शरणं तव चरणं अनिशम्
अजुनकु आदि कारणमैन अनादि पुरुष अव्यय ॥जय॥
कमल नयन श्रीहरिदासुलु कॊलुचु कोदंड राम
कमलनाभ अभीष्ट वर प्रदायक प्रशांति निलयम राम ॥जय॥

178) यदुकुलकांभोजि - आदि ताळं

अवधरिंचरा अव्याज प्रेमस्वरूप अमरेश्वर ॥अवध॥
बिंकमेलरा, वनांतर सीमल कंदमूलाल आरगिंचुचु
ए वंको ए डॊंको तिरिगि तिरिगि वेसारिन विमल यशस्वि ॥अवध॥
अवधिनाथ अमरनाथ श्रीहरिदास हृदयाधीश
अवनि ब्रोव अवतरिंचिन नतजन पाल परम पावन ॥अवध॥

179) देशि - चापु ताळं

श्री रामचंद्रं रघुपतिं मनसा स्मराम्यहं ॥श्री॥
हनुमत्सेवितं अमरजन वंदितम्
अनुपम गुणांबुधिं विबुध सेवितम् ॥श्री॥
रावण दर्पहरं सल्लक्षणं लक्ष्मणानुजम्
अवनिजाश्रयम् श्रीहरिदासार्चितम् श्रीदम् ॥श्री॥

180) साम - चापु ताळं

सललित सद्गुणालय करुणालवाल ॥सललित॥
कलुष विदूर श्रीहरिदास लोल श्रीलोल ॥सललित॥
राम रघुराम नामीद दय रादा श्रीद
राम जगदभिराम रमेश रमा लोल ॥सललित॥
वेमारु वेडिननू विनवेमिरा राम श्रीराम
मारु पलुक वेमिरा मारामु चेय नेलरा ॥सललित॥

181) धन्यासि - आदि ताळं

शुद्धब्रह्म परात्पर परंधाम विशुद्धात्मवे ॥शुद्ध॥
सरगुन पालिंप रारा रघुकुल रामचंद्र
सरियैन सर्वेश्वरुडवु सुर नर विबुधुलंदु ॥शुद्ध॥
मन्ननलु चेयु वारिनि मन्निंचु वाडवे
अनधीन अनंत हरिदासबुध जनोद्धारक ॥शुद्ध॥

182) शुभपंतुवराळि - रूपक ताळं

आधिव्याधि ताप दमन दामोदर ॥आधि॥
आदिवि सनातन सारथिवि नीवंद्रु ॥आधि॥
नादि नादनुचु नाना वॆतल पालय्येनु
नीदि नीदनुचु निरतमु नीदु भजन सेयु
नी दासुडनु श्रीहरिदासुडनु गदरा ॥आधि॥

183) आभेरि - आदि ताळं

वंदलादि वंदनालु यदु नंदनुनकु ॥वंद॥
अंदालु चिंदेटि चंदनांगद श्रीवरद
बंधाल अनुबंधाल द्रुंचु श्रीवंद्य ॥वंद॥
ऎंदॆरेंदरो ऎंचेटि एकात्म वेद वेद्य
अंदरु आराधिंचे श्रीहरिदास वंद्य ॥वंद॥

184) रीतिगौळ - रूपक ताळं

अंदरिनि आदरिंचु हरिदास नाथ सनाथ ॥अंदरिनि॥
मंदस्मित मधुरानाथ माधव गोविंद
मंदरधर सुंदरवदन वंदनमंदुकॊ ॥अंदरिनि॥
मदमात्सर्याल मापु माकुलदैवम
मुदितमृदु वदनारविंद मुकुंद ॥अंदरिनि॥

185) हरिकांभोजि - रूपक ताळं

हरि ॐ तत् सत् हरि ॐ तत् सत् अनरे ॥हरि॥
परिकिंप ऎल्लॆडल परिताप हरिये परममट
हरिने श्रीहरिने परिपरि कोररे सरिग सरगुन ॥हरि॥
सिरि विरिंचि शिवादुल कॆल्ल हरिये वरप्रदुडु
सिरि किरवैन भद्रगिरि यंदुन्न हरिदास वरदुनि ॥हरि॥

186) श्रीरागं - जंपॆ ताळं

संचित कलुषाल संतरिंचु अनंतश्री ॥संचित॥
पॆंचिन कॊलदि पॆरुगु बंधालु
त्रुंचिन कॊलदि तुनुगु तलपुलु ॥संचित॥
ऎंचिन कॊलदि ऎदुगु हरिदास वरदुनिपै अनुरागमु
इंचुक तलचरो इनकुल पतिनि अहरहमु अंतरंगाल ॥संचित॥

187) सारंग - आदि ताळं

श्रीहरि पादकमल गुणगानमे मधुर गानमिल ॥श्री॥
सरस राग भाव सहित श्रुति लयल विराजिल्लु हरिकीर्तन
गांधर्व गानमदे, ब्रह्मेंद्रादुलु संस्तुतिंचु ॥श्री॥
श्रीहरिदासुल मनमुल रंजिंप जेयु सद्भक्ति सहित
संगीतमु, शोभिल्लु सप्त स्वरमुलचे इंपुगा सॊंपॊंदु ॥श्री॥

188) शुद्धबंगाळ - चापु ताळं

मन्निंचु वाडवनु मन्नन कल महनीय ॥मन्निंचु॥
वेलादि वेल मानवुलु मद मात्सर्याल एलेरु निर्दयतो,
नीदंडये कोरेरुई जगतिनि अहरहमु नतजनुलु ॥मन्निंचु॥
पंडिन पापालु मेंडै, चेंडेरु मोंडैन नायकुलु, दिनमोक
युगमुग गडुपु दीनुलु ई हरिदासुलु निन्ने कोलिचेरुरा ॥मन्निंचु॥

189) यदुकुलकांभोजि - मिश्र चापु ताळं

धन्युडनौदु निनुस्मरिंचिन निमुषमे ओदयानिधि ॥धन्युड॥
अन्यचिंतले एन्नियोनेंच नादलविकादु नीदयलेदु ॥धन्युड॥
मान्युलय्येरु नीपदभजन सेवापरुलु श्रीहरिदासुलु
शून्यमाये नाण्यमुलेनि नाजीवितमु ननुकरुणिंचर
एन्यायमिक शोधिंचकय्य चित्तोपरतिय्यि प्रशांतिप्रद ॥धन्युड॥

190) शंकराभरणं - आदि ताळं

जगद्गुरुनि जगदीशुनि चक्कग कोलुवरे ॥जग॥
गुरुवु लेक गुरि लेदु चित्तमुनकु
सद्गुरुवतडे सुज्ञान ज्योतिर्मयुनि ॥जग॥
मोक्षार्थुलकु हरिदासुलकु अत्युत्तममु
लक्ष्यमदे ऎन्नग बाह्याभ्यंतर शौचमुलु ॥जग॥

191) हुसेनि - चापु ताळं

तेलियरो भद्रगिरि रामुडे दोर इलकेल्ल दोड्डदोर ॥तेलिय॥
रासुलुन्न कंडकावरमु, दर्पाभिमान डांबिकमुल
अन्नु मिन्नु कानक परुषत्वमुन चेलगु जनुलारा ॥तेलिय॥
असुर संपदलचे पोरलुचु हरिदासुनि तत्त्व साधनकु
अवांतराल कलिगिंचेरु, कुटिल बुद्धुल परगु पामरुलारा ॥तेलिय॥

192) श्रीरंजनि - आदि ताळं

करुणिंचि नन्नेलुकोनुम नादु दैवम ॥करुणिं॥
उन्नदि ऊडवच्चु रानट्लुंडि गारडि वले रावच्चु रासुलु
रासुलुग, दोरकदु ब्रह्मानंदमु नि प्रापु दोरकनिदे ॥करुणिं॥
चिंतले चिम्मचीकट्लु, अज्ञानावनिकि वेन्नुनि वेलुगे
ज्ञानमनि पदेपदे कोलुतुरटने श्रीहरिदासुलु ॥करुणिं॥

193) मध्यमावति - आदि ताळं

हरि गुण गानं मंगळं परमम् ॥हरि॥
परम निधानं परमानंद भैरवम् ॥हरि॥
सकल कलिमल भंजनं श्रीहरि नामं
सकल पाप हरं सुर भूसुर विनुतम् ॥हरि॥
कैवल्य प्रदायकं ब्रह्मेंद्रादि विबुध सेवितम्
दिव्यतेज संशोभितं श्रीहरिदास संपूजितम् ॥हरि॥

194) सरसांगि - रूपक ताळं

ऎनलेनि नीपद ध्यानमु नाकब्बेने एको नारायण ॥ऎन॥
ऎनलेनि सुखशांतुलु नाकब्बुनुगा अब्बुरमुग ॥ऎन॥
हरे राम हरे कृष्ण यनि चाटु जिह्वचे निलिचेगा

हरिदासुनि मनमु नी मनोहर गुण प्रस्तुति यंदु ॥ऐन॥

195) कल्याणवसंतं - आदि ताळं

अम्म मायम्म बिरान ब्रोववम्मा ॥अम्म॥
मंचि मर्यादलु ऎंच वलॆना इंदीवराक्षि
मायिंटि वरदुनि मनमार मुरिपिंचु ॥अम्म॥
मुचिकुंद वरदुनितो मुच्चट लाडुवेळ
मुच्चटिंचवे ई हरिदासुनि विन्नपालु ॥अम्म॥

196) मोहन - चापु ताळं

जत गूडुने नी ध्यान मात्रान मनो निग्रहादि सिद्धुलु ॥जत॥
श्रीराम जयराम अनुचु पलुमारु पलुवरिंचिन ॥जत॥
नीनाममु लोकोत्तममु विनिनंतने ज्ञान मॊसगु विनुत गुणशील
नीनाम जपमेग कैवल्य प्रदमु कलि युगमंदु, श्रीहरिदासनुत ॥जत॥

197) शंकराभरणं - रूपक ताळं

आनंद घनमु ज्ञान घनमु नित्य मुक्तमटने ॥आनंद॥
अनेक जन्म पुण्य परिपाकमट अक्षय विभो ॥आनंद॥
अनन्य पुरुषार्थ ब्रह्म पदार्थमैन परात्पर
अनवरतमु सदाश्रयुडवैन श्रीहरिदासार्चित ॥आनंद॥

198) आंदोळिक - आदि ताळं

अंबनु जगदंबनु शुभंकरिनि सेविंपरे ॥अंबनु॥
जन्ममिच्चिन जननि जलजाक्षिनि जगदीश्वरिनि
जननमरण शोक निरोधिनि निरंजनि नितंबिनि ॥अंबनु॥
हरिदास विभुनि हृन्निवासिनि सुवासिनि
हरित लोचनि लोक पावनि पाप विभंजनि ॥अंबनु॥

199) देवगांधारि - आदि ताळं

हरि भजनानंदमु पॊंदवे ओ मनसा ॥हरि॥
भाव मंदुन भाव्य मंदुन परवशिंचि ॥हरि।
आशलु लेकुंड मनो प्रवृत्तुल गट्टिग पट्टि
देव देवुनिपै निलिपि आत्म तेजस्सु चॊच्चुटकै ॥हरि॥
रासुलु रासुलुग वित्तमु पॊंदिननु कूटिके
सरिपोवु, तप्पदु चावु तुदकु, मदिनि हरि
रूपमु चूडकोरिन दिनमे सुदिनमंद्रु ॥हरि॥

200) यमुनाकल्याणि - आदि ताळं

वैकुंठ पुरनिवास वॆडलि रावय्या ॥वैकुंठ॥
वॆनुवॆंट श्रीदेवितो कदलि रावय्या ॥वैकुंठ॥
अंगरंग वैभवंबुतो वॆडलि रावय्या
श्रीवत्स कौस्तुभमु वॆलुगॊंदु कमनीय शोभतो ॥वैकुंठ॥
शंख चक्रालु पूनि मॆरयु चिद्विलासमुतो
श्रीदेवि मनोहर राजीव लोचन रावय्या ॥वैकुंठ॥
कृपारसमु उप्पॊंगु दरहास वदनमुतो
श्रीकस्तूरी तिलक रम्य गुणधाम रावय्या ॥वैकुंठ॥

श्लोकं॥ अहिंसा प्रथमं पुष्पं। पुष्पमिंद्रिय निग्रः।
सर्वभूतदया पुष्पं। क्षमा पुष्पं विशेषतः।
शान्ति पुष्पं तपः पुष्पं। ध्यान पुष्पं तथैवचः।
सत्यं अष्टमिदं पुष्पं। विष्णोर् प्रीतिकरं भवेत्॥

श्लोकं॥ पापोऽहम् पापकर्माऽहम् पापात्मा पापसंभवः
त्राहिमां कृपयादेव शरणागतवत्सल
अन्यथा शरणंनास्ति त्वमेव शरणंमम
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्षो जनार्दन॥

श्लोकं॥ अपचारनिमान् सर्वान् क्षमस्व पुरुषोत्तम
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुते॥

श्लोकं॥ यदक्षर पदभ्रष्ठम् मात्राहीनं तु यद्भवेत्
तत्सर्वं क्षम्यताम् देव नारायण नमोस्तुते॥
अपराध सहस्राणि क्रियान्तेऽहर्निशं मया
तानि सर्वाणि मे देव क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

अच्युताय नमः
अनन्ताय नमः
गोविंदाय नमः

सर्वेजनाः सुखिनोभवंतु। सर्वलोकाः सुखिनोभवंतु॥

ॐतत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु
हरिः ॐ